APPROACH – ANSWER: G. S. MAINS MOCK TEST - 1838 (2022)

1. The Chalukyan architecture uniquely epitomises the grandeur and hybrid characteristic style of temple building. Elaborate. (150 words) 10

चालुक्य स्थापत्य कला विशिष्ट रूप से मंदिर निर्माण की वैभवपूर्ण और संकर अभिलक्षणिक शैली का प्रतीक है। सविस्तार वर्णन कीजिए।

दृष्टिकोण :

- चालुक्यों के कालक्रम के साथ उत्तर प्रारंभ कीजिए।
- तात्कालिक उदाहरणों के साथ इस तथ्य की पुष्टि कीजिए कि कैसे मंदिरों का निर्माण अद्वितीय था और यह संकर शैली का प्रतीक था।
- सांस्कृतिक विरासत में इसके योगदान के साथ निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

बादामी के चालुक्यों को भारतीय कला एवं वास्तुकला में उनके अद्भुत योगदान के लिए जाना जाता है। इन्होंने दक्कन के दक्षिणी भाग में कर्नाटक क्षेत्र में 8वीं शताब्दी के मध्य तक शासन किया। इसके पश्चात् 11वीं शताब्दी ईस्वी के लगभग पश्चिमी चालुक्यों (कल्याणी के चालुक्य) ने शासन किया। **ऐहोल, बादामी और पट्टडकल** (यूनेस्को विरासत स्थल) के मंदिर, स्मारकों के सबसे बड़े एवं सर्वाधिक प्राचीन समूह हैं। ये समूह भारत में हिंदू शैलकृत संरचना और मंदिर वास्तुकला के विकास को व्यापक रूप से प्रदर्शित करते हैं।

वेसर शैली की विशेषता वाली चालुक्य मंदिर स्थापत्य कला, **मंदिर निर्माण की विशिष्ट संकर शैली का प्रतिनिधित्व करती है। इसकी विशेषताओं में निम्नलिखित शामिल हैं:**

- **मंदिर के स्तंभ:** कर्नाटक क्षेत्र में स्थित अधिकांश चालुक्य मंदिरों के स्तंभ, उत्तरी भारत के शेखरी (Sekhari) और भूमिज (Bhumija) प्रकार के स्तंभों के समान हैं।
- **मंदिर के डिज़ाइन में स्पष्टता:** इस मंदिर की आधारभूत योजना और इसमें शामिल उप-देवालय, पंचायतन शैली, स्टेप्ड-डायमंड प्लान, सभी नागर शैली से मिलते जुलते हैं।
- **पूर्वी नागर शैली का प्रभाव:** गर्भगृह को मंडप से जोड़ने की योजना ओडिशा के मंदिरों से मिलती जुलती है। उदाहरण के लिए, पूर्वी चालुक्यों के मंदिरों, जैसे **महाकूट** मंदिर और **आलमपुर** स्थित स्वर्ग ब्रह्म मंदिर में ओडिशा और राजस्थान की उत्तरी शैली की झलक देखने को मिलती है। यहां तक कि **ऐहोल का दुर्गा मंदिर,** जो गजपृष्ठाकार शैली में निर्मित है, यह बौद्ध चैत्यों के समान शैली में बना है और इसका शिखर शैलीगत रूप से ओडिशा के मंदिरों से (नागर शैली) मिलता जुलता है।
- **अलंकरण:** चालुक्य मंदिरों में लघुचित्र से सजी मीनारों तथा दीवारों का अलंकरण नागर शैली एवं द्रविड़ शैली, दोनों के संयोजन को दर्शाता है।
- **विमान:** द्रविड़ प्रभाव मुख्यतः चालुक्य शासन के प्रारंभिक भाग में चालुक्य मंदिरों के विमान में दिखाई देता है।
- **फारसी का प्रभाव:** फूल, पत्तियों, शाखाओं या विकृत शाखाओं के पैटर्न के साथ रैखिक कलात्मक सजावट अरबस्क कला की विशेषताएं हैं। चालुक्य मंदिरों की छतों के त्रिकोणीय स्थानों में ऐसी कलाकृतियां देखी जा सकती हैं।

हालांकि, इसकी कुछ विशिष्ट विशेषताएं और भव्यताएं भी हैं:

- चालुक्य वास्तुकला की महत्वपूर्ण विशेषताओं में **छोटे आधार वाले डिज़ाइन, घोड़े की नाल का आधार, चौकोर/वर्गाकार गर्भगृह, आंतरिक प्रदक्षिणा पथ**, मुखमंडप और गर्भगृह पर पिरामिड शिखर शामिल हैं।
- **गर्भगृह के साथ स्तंभ मंडप (नवरंग) और सुकनसा या सुकनसी का निर्माण** चालुक्यों का एक विशिष्ट योगदान था।

 ©Vision IAS

- **मंदिर के प्रवेश द्वार** में **दो या दो से अधिक प्रवेश द्वार** का होना **चालुक्य मंदिरों की** एक खास विशेषता है। यद्यपि नागर मंदिरों में आमतौर पर एक छोटा बंद मंडप होता है और द्रविड़ मंदिरों में एक बड़ा, खुला और बंद मंडप होता है।
- चालुक्य वास्तुकला में **गुफा मंदिर और संरचित मंदिर डिज़ाइन, दोनों शामिल थे। चालुक्य मंदिरों के द्वार के चौखटों को अत्यधिक अलंकृत किया गया है** जिनमें भित्ती स्तंभ (Pilaster), अनेक ढलवा खंबे (Moulded lintel), कॉर्निस टॉप शामिल हैं। चालुक्य मंदिर में इस्तेमाल होने वाले कॉर्निस, वर्षा के जल को नीचे की ओर ले जाने या असहनीय गर्मी से बचाने का कार्य करते हैं।
- चालुक्य मंदिरों में आमतौर पर **छज्जों** की संरचना देखने को मिलती है। उदाहरण के लिए, मुक्तेश्वर मंदिर।
- **चालुक्य मंदिरों के स्तंभ एकाश्म स्तंभ दंड से निर्मित हैं।** इनकी ऊंचाई, मंडप और मंदिरों की ऊंचाई के अनुसार होती है।
- **इन मंदिरों के गलियारे को कृत्रिम रोशनी से अलंकृत किया गया था।** इससे, मंदिरों में अँधेरा भी दूर हो गया और साथ ही, एक प्रकार की रहस्यवादी भावना भी समाहित हो गई।
- चालुक्य मंदिरों में **दीवार की नक्काशी में उभार के लिए सेलखड़ी का उपयोग** एक सामान्य विशेषता है।

वास्तव में, चालुक्य मंदिर स्थापत्य शैली के एक विशिष्ट रचनात्मक समुच्चय का प्रतीक हैं। इन मंदिरों में आज भी लोगों की गहरी कलात्मक-ऐतिहासिक रुचि बनी हुई है। इसलिए, यह कहना गलत नहीं होगा कि ये मंदिर स्थापत्य कला के उद्गम स्थल हैं।

2. The success or failure of a political movement is not always determined by the achievement of its stated goals. Discuss in light of the Ghadar movement.

(150 words) 10

किसी राजनीतिक आंदोलन की सफलता या विफलता सदैव उसके घोषित लक्ष्यों की प्राप्ति से निर्धारित नहीं होती है। गदर आंदोलन के आलोक में चर्चा कीजिए।

दृष्टिकोण :

- गदर आंदोलन और उसके उद्देश्यों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
- विभिन्न दृष्टिकोणों से आंदोलन की सफलता और विफलता का विश्लेषण कीजिए।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

वर्ष 1913 में गदर आंदोलन को अमेरिका में शुरू किया गया था। भाई परमानंद, सोहन सिंह भकना, लाला हरदयाल एवं अन्य क्रांतिकारी राष्ट्रवादी इस आंदोलन से जुड़े हुए थे। इसकी शुरुआत अप्रवास पर ब्रिटिश प्रतिबंधों तथा पश्चिमी देशों में भारतीय प्रवासियों के साथ हो रहे भेदभाव के विरुद्ध एक आंदोलन के रूप में हुई थी। कुछ समय बाद भारत में यह आंदोलन ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक सशस्त्र संघर्ष में बदल गया।

इस आंदोलन का उद्देश्य ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकना था। इसके लिए अधिकारियों की हत्या करने, जनता में राष्ट्रवादी चेतना जागृत करने और व्यापक स्तर पर सैनिकों की निष्ठा को बदलने की रणनीति का इस्तेमाल किया गया। **हालांकि, वे निम्नलिखित कारणों से अंग्रेजों को देश के बाहर नहीं निकाल पाए:**

- **उन्होंने** संगठनात्मक, वैचारिक, रणनीतिक, सामरिक एवं वित्तीय स्तर पर **तैयारियों की सीमा और मात्रा का ठीक से आकलन नहीं किया।** सशस्त्र विद्रोह का प्रयास करने से पहले सही आकलन अत्यंत आवश्यक था।
- **उन्होंने भारत में अंग्रेजों की** सैन्य एवं संगठनात्मक शक्ति को कम आंका। साथ ही उनके शासन की वैचारिक नींव का भी सही आकलन नहीं किया।
- यह आंदोलन, आंदोलन के विभिन्न पहलुओं को एकीकृत करने वाला एक **प्रभावी नेतृत्व प्रदान करने और इसे निरंतर बनाए रखने में भी असफल रहा।**
- इस आंदोलन में **एक प्रभावी संगठन का अभाव था, यह क्रांतिकारियों के उत्साह भर से ही संचालित होता रहा।**

इसके बावजूद, गदर आंदोलन का स्वतंत्रता संग्राम में बहुत बड़ा योगदान रहा। इसे निम्नलिखित बिंदुओं में वर्णित किया गया है:

- इस आंदोलन ने **राष्ट्रवादी चेतना को बढ़ाने तथा नई रणनीतियों और कार्यनीतियों के परीक्षण में योगदान दिया।**
- **इससे प्रतिरोध, लोकतंत्र और समतावाद की परंपरा का विकास हुआ।** इसके परिणामस्वरूप 1920 और 1930 के दशक में कई गदर आंदोलनकारी, किसान नेता और कम्युनिस्टों के रूप में उभरकर सामने आए।

- पूर्णतया धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण के साथ इस आंदोलन ने **विभिन्न धर्मों के बीच उग्र राष्ट्रवाद का भी प्रचार किया।**
- इस संघर्ष ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध **संपूर्ण विश्व में रहने वाले प्रवासी क्रांतिकारी भारतीयों को एकजुट किया।**
- इसका एक अन्य प्रमुख योगदान **गदर आंदोलनकारियों के बीच सही अर्थों में एक अंतर्राष्ट्रीयवादी दृष्टिकोण का सृजन करना था।**

भले ही गदर आंदोलन अपने घोषित लक्ष्यों को प्राप्त करने में असफल रहा, इसके बावजूद इसने कई अन्य उपलब्धियों को हासिल किया। साथ ही, इसने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आगे के संघर्षों के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया। गदर आंदोलन की क्रांतिकारी गतिविधियों ने रॉलेट एक्ट के खिलाफ विरोध को प्रेरित किया। साथ ही, औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष की आवश्यकता के बारे में जागरूकता को बढ़ाया और भगत सिंह जैसी प्रमुख हस्तियों को भी प्रेरित किया।

3. Discuss the ways in which Gandhian conceptualisation of Sarvodaya influenced Vinoba Bhave's Bhoodan movement. (150 words) 10

उन तरीकों की विवेचना कीजिए जिनसे सर्वोदय की गांधीवादी अवधारणा ने विनोबा भावे के भूदान आंदोलन को प्रभावित किया था।

दृष्टिकोण :

- सर्वोदय की गांधीवादी समझ के संक्षिप्त विवरण के साथ उत्तर आरंभ कीजिए।
- विवेचना कीजिए कि इसने विनोबा भावे के विचारों और भूदान आंदोलन को किस प्रकार प्रभावित किया।
- उचित रूप से निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

गांधीवादी सर्वोदय वितरणात्मक न्याय पर आधारित था। सर्वोदय का अंतिम उद्देश्य सभी का पूर्ण कल्याण अथवा सभी का अधिकतम कल्याण करना है। यह व्यक्ति एवं पूरे समाज के सर्वांगीण विकास के लिए धार्मिक, नैतिक, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक सभी स्थितियों का योग है।

गांधीजी के अनुसार ग्रामीण समाज भारत की आत्मा है। उन्होंने ग्रामीण समाज की आत्मनिर्भरता पर बल दिया। इसका अर्थ गांवों में रहने वाले लोगों की जरूरतों को कृषि अर्थव्यवस्था और संबद्ध कृषि-उद्योगों से पूरा करना है। इससे, उनका समग्र विकास और समृद्धि भी सुनिश्चित होगी।

विनोभा भावे के भूदान आंदोलन पर गांधीवादी योजना

विनोबा भावे ने गांधीजी के आर्थिक विचार को अधिक व्यावहारिक रूप में विकसित किया। उन्होंने ग्रामीण भारत में असमान भूमि वितरण को सर्वोदय समाज के लिए सबसे बड़ी बाधा माना। विनोबा भावे इस बात का समर्थन करते थे कि ग्रामीण धनिकों को भूमि के स्वैच्छिक वितरण में भाग लेना चाहिए। इसके लिए, वर्ष 1951 से विनोबा भावे पैदल गाँव-गाँव गए और इस आंदोलन का प्रचार किया।

A. भूदान/ग्रामदान की अवधारणा

- आंदोलन का **आरंभिक लक्ष्य स्वैच्छिक भूमि-अनुदान सुनिश्चित करना** और उसका **भूमिहीनों के बीच वितरण करना था।** हालांकि, शीघ्र ही आंदोलन के तहत प्रत्येक भू-स्वामी से **भूमि का 1/6 भाग देने की मांग** की गई।
- वर्ष 1952 में, आंदोलन की **अवधारणा का विस्तार करते हुए इसे ग्राम-दान (उपहार में ग्राम)** कर दिया गया और भूमि के व्यावसायिक स्वामित्व का समर्थन किया गया।
- **ग्राम-दान** की प्रक्रिया का प्रारंभ ग्रामीणों में **सामाजिक चेतना (ग्राम-भावना) के जागरण** के साथ होता है। इसके पश्चात् **'ग्रामदान'** के अनुरूप **जीवन शैली अपनाने की शपथ लेनी होती है। इसके परिणामस्वरूप लोक शक्ति** (जन-शक्ति) के मुखर होने की आशा की जाती है। ग्राम-दान के अधीन आने के लिए, किसी गांव को तीन कदम उठाने पड़ते थे:
  - ग्रामदान के लिए तैयार गांव-वासियों को वैधानिक रूप से गठित एक **ग्राम सभा के पक्ष में अपनी समस्त भूमि के स्वामित्व अधिकारों के अंतरण** के लिए सहमत होना चाहिए।
  - **ग्राम सभा का गठन पहले ही कर लिया जाना चाहिए।**
  - **सामाजिक कल्याणकारी कार्यों और आर्थिक विकास के लिए एक ग्राम कोष** की स्थापना की जानी चाहिए।

B. ग्राम पंचायत की भूमिका

- ग्रामदान के अधीन गांवों में ग्राम सभा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ग्रामीण समाज की पुनर्संरचना के लिए यह **गांधीजी के राजनीतिक अभियोजन** का एक अंश है। ग्रामीण समाज में ग्राम पंचायतें भारतीय लोकतंत्र का केंद्र होती हैं।

- **आर्थिक और राजनीतिक सत्ता के विकेंद्रीकरण** के लक्ष्य गांधीवादी नीति निर्धारण के अंतर्गत ही आते हैं। इस योजना में ग्राम पंचायत या ग्राम सभा **भूमिहीनों को भूमि वितरित करने** के लिए उत्तरदायी थी। साथ ही,सामुदायिक विकास कार्यों हेतु भूमि एवं गांव-वासियों की श्रम शक्ति के समुचित नियोजन के लिए ग्राम सभा ही **प्रशासनिक इकाई** का काम करती थी।
- **खादी बुनाई** सर्वोदय गांव का एक भाग था जहाँ गाँव के श्रमिक स्वयं को सार्थक रूप से संलग्न कर सकते थे।
- ग्राम स्तर पर **लघु उद्योगों** को कार्य करने की अनुमति थी। इसका लक्ष्य गांव की अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाना और शहरी अर्थव्यवस्था पर निर्भरता को कम करना था।

C. निजी संपत्ति की भूमिका

- भूदान आंदोलन ने **निजी संपत्ति की सबसे संवेदनशील व्यवस्था** को छुआ। यह गांधीवादी अवधारणा थी कि भूमि ईश्वर की देन है और इसका उपयोग सभी प्राणियों द्वारा किया जाना चाहिए।

भले ही भूदान आंदोलन ने एक न्यायपूर्ण समाज को प्रेरित किया हो, लेकिन विचारधारा के संदर्भ में इसकी अपनी सीमाएं थीं। ऐसा इसलिए क्योंकि यह अभिजात वर्ग के विरुद्ध था और इसमें संगठनात्मक संरचना का अभाव था। हालांकि, यह कहा जा सकता है कि भूदान आंदोलन भारतीय धरती पर शुरू किया गया एक नया प्रयोग था। इसका उद्देश्य एक समतावादी समाज का निर्माण करना और गांधीजी के सामाजिक परिवर्तन की रूपरेखा को साकार करना था।

4. Bring out the evidences, which led to the Plate Tectonics Theory. Also, discuss how this theory explains the movement of plates. (150 words) 10

उन साक्ष्यों को उजागर कीजिए जिनसे प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत का प्रतिपादन हुआ। साथ ही, विवेचना कीजिए कि यह सिद्धांत किस प्रकार प्लेटों की गति की व्याख्या करता है।

दृष्टिकोण:

- प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के संबंध में संक्षेप में लिखिए।
- प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के समर्थन में साक्ष्यों का उल्लेख कीजिए।
- इस सिद्धांत के अनुसार प्लेटों के संचरण की व्याख्या कीजिए।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत पृथ्वी की सतह पर महासागरों और महाद्वीपों के वितरण को **स्पष्ट करने का प्रयास करता है। विवर्तनिक प्लेट**, ठोस चट्टानों का विशाल व अनियमित आकार का एक खंड है, जो महाद्वीपीय व महासागरीय स्थलमंडलों से मिलकर बना है। ध्यातव्य है कि विवर्तनिक प्लेट को लिथोस्फेरिक प्लेट भी कहा जाता है।

इस वितरण की व्याख्या करने के पूर्व प्रयासों ने **महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत (Continental Drift theory) और सागरीय अधस्तल के विस्तार (Sea floor spreading)** की अवधारणा का विकास किया। प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के साक्ष्य निम्नलिखित हैं:

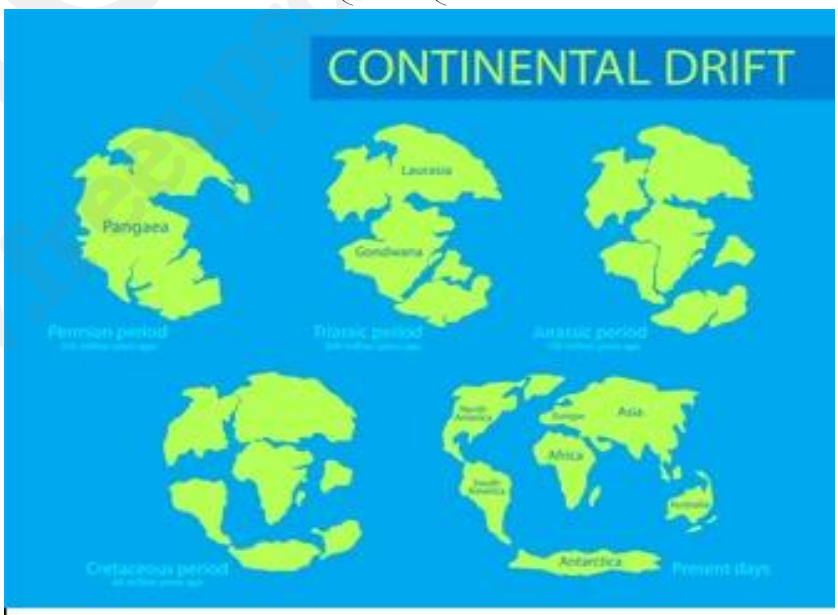

- **कई महाद्वीपों का आकार** ऐसा है कि वे किसी **जिग-सॉ पहेली** के अलग-अलग टुकड़ों के रूप में प्रतीत होते हैं। उदाहरण के लिए, उत्तर और दक्षिण अमेरिका के पूर्वी तट के आकार के सापेक्ष अफ्रीका और यूरोप के पश्चिमी तट का आकार।
- **कुछ ऐसे महाद्वीपों के तटों पर जीवाश्मों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिनके** किनारे एक-दूसरे में फिट हो सकते हैं। अध्ययन के दौरान इन प्रजातियों की आपस में समानता देखने को मिलती है।

- **घाना तट में सोने के बड़े प्लेसर निक्षेपों की उपस्थिति व इस क्षेत्र में उद्गम चट्टानों की अनुपस्थिति** दर्शाती है कि दोनों महाद्वीप एक-दूसरे से जुड़े हुए थे।
- मध्य-महासागरीय कटकों के साथ-साथ ज्वालामुखी उद्गार एक **सामान्य क्रिया है और वे अपसारी सीमाओं (Divergent Boundaries) का निर्माण करती हैं।** महासागरीय कटक के मध्य भाग के दोनों तरफ समान दूरी पर पाई जाने वाली चट्टानों के निर्माण का समय, संरचना, संघटक और चुंबकीय गुणों के संदर्भ में **उल्लेखनीय समानताएं** पाई जाती हैं। ये सभी समान उत्पत्ति का प्रमाण हैं।
- मध्य महासागरीय कटकों के समीप की चट्टानों में सामान्य चुंबकीय ध्रुवण (Normal polarity) पाया जाता है तथा ये चट्टानें नवीनतम हैं। साथ ही, **कटकों से दूर जाने पर चट्टानों की आयु बढ़ती जाती है।**
- महासागरीय अधस्तल पर **तलछट अप्रत्याशित रूप से बहुत पतला या हल्का** होता है। यह दर्शाता है कि महासागरीय पर्पटी की चट्टानें महाद्वीपीय चट्टानों की अपेक्षा नई हैं।

पुराचुंबकत्व (Palaeomagnetism) और सागरीय अधस्तल के विस्तार के उपर्युक्त साक्ष्यों के आधार पर यह प्रमाणित है कि महाद्वीप और महासागरीय बेसिन अपने स्थानों पर कभी भी स्थायी नहीं रहे हैं। ये पृथ्वी के भूवैज्ञानिक इतिहास में हमेशा गतिशील रहे हैं तथा एक-दूसरे के सापेक्ष गति करते रहे हैं।

प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत द्वारा स्पष्ट की गई प्लेटों की गति

- प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के अनुसार, **पृथ्वी का स्थलमंडल सात मुख्य प्लेटों और कुछ छोटी लिथोस्फेरिक प्लेटों से मिलकर बना** है। ये प्लेटें **दुर्बलतामंडल (Asthenosphere) में क्षैतिज अवस्था** में गतिमान हैं।
- ऐसा माना जाता है कि **दृढ़ प्लेट के नीचे गतिमान चट्टानें वृत्ताकार गति कर रही हैं।** गर्म पदार्थ धरातल पर आकर फैल जाता है और धीरे-धीरे ठंडा होता है। इसके बाद यह गहराई में जाकर नष्ट हो जाता है। **यही चक्र बार-बार दोहराया जाता है** और वैज्ञानिक इसे **संवहन प्रवाह (Convective flow) कहते हैं।**
- पृथ्वी के भीतर **ताप** उत्पत्ति के **दो माध्यम हैं- रेडियोधर्मी तत्वों का क्षय और अवशिष्ट ताप।** दृढ प्लेटों के नीचे स्थित गर्म, दुर्बल मैंटल की धीमी गति ही **प्लेटों के प्रवाह का कारण** है।

महाद्वीपों और महासागरों के वितरण सहित, विश्व का वर्तमान भौतिक मानचित्र प्लेट विवर्तनिकी प्रक्रिया का परिणाम है।

5. Give an account of the formation of Abyssal Plains and highlight the relief features found on these plains. (150 words) 10

वितलीय मैदानों के निर्माण का विवरण दीजिए और इन मैदानों पर पाए जाने वाले उच्चावच संबंधी लक्षणों पर प्रकाश डालिए।

दृष्टिकोण:

- वितलीय मैदानों के संक्षिप्त परिचय के साथ उत्तर आरंभ कीजिए।
- व्याख्या कीजिए कि कैसे उनका निर्माण हुआ है।
- इन मैदानों पर पाए जाने वाले उच्चावच संबंधी लक्षणों का विवरण दीजिए।
- संक्षिप्त निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

वितलीय मैदान गहरे महासागरीय अधस्तल के अत्यंत समतल और आकृति विहीन मैदान हैं। ये महाद्वीपीय सीमाओं और मध्य-महासागरीय कटकों के बीच 3000 मीटर से 6000 मीटर की गहराई पर पाए जाते हैं। ये महासागरीय अधस्तल के एक बड़े भाग (लगभग 40%) में फैले हुए हैं। ये अटलांटिक महासागर में विस्तृत तथा अधिक सामान्य रूप में पाए जाते हैं। वहीं ये हिंद महासागर में कम सामान्य रूप में और प्रशांत महासागर में दुर्लभ रूप में पाए जाते हैं।

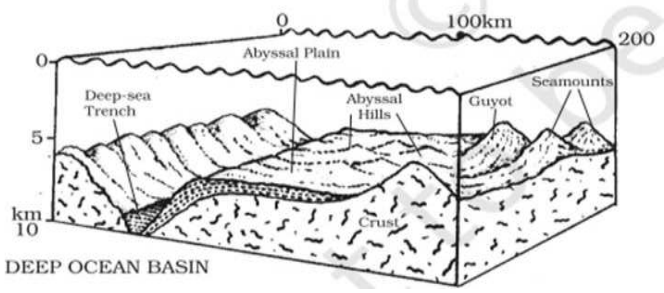

वितलीय मैदानों के निर्माण का विवरण:

- **अवसादन (Sedimentation):** महाद्वीपों के निकटवर्ती वितलीय मैदान अधिकांशत: स्थल खंड से आए तलछट से आच्छादित होते हैं। लेकिन जिन समुद्रों में जीवों की अत्यधिक वृद्धि होती है उन पर तलछट की मोटी परत होती है और इस तलछट का निर्माण समुद्री जीवों के अस्थि-पंजरों से होता है। इन तलछटों को ऊज या सिंधुपंक कहते हैं।

- **आविलता धाराएं (Turbidity Currents):** महाद्वीपीय सीमाओं से तलछट खड़ी महाद्वीपीय ढलानों पर जमा होती है। साथ ही, कभी-कभी समुद्र के भीतर इन मोटे या दानेदार पदार्थों के खिसकने से गाढ़े, तलछट युक्त पंक का निर्माण होता है, जिन्हें आविलता धाराएं कहा जाता है। ये गुरुत्वाकर्षण के कारण ढलानों से नीचे बहती हैं। आविलता धाराओं से तलछट का एक हिस्सा महाद्वीपीय ढलानों के आधार पर निक्षेपित हो जाता है, जिससे निम्न ढाल वाले महाद्वीपीय उत्थान का निर्माण होता है, लेकिन कुछ मोटे या दानेदार तलछट वितलीय खाइयों तक पहुंच जाते हैं, परिणामस्वरूप ये वितलीय मैदानों का निर्माण करते हैं।
- **गहरे समुद्र के पंक का निक्षेपण (Deposition of deep-sea clay deposits):** यह भी प्रस्तावित किया गया है कि गहरे समुद्र के पंक के निक्षेपों धीरे-धीरे बहाकर लगातार वितलीय मैदानों में लाया जा सकता है। यह कार्य अशांत उथले निकटवर्ती क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाले फैले हुए मटमैले अधस्तलीय जल द्वारा किया जाता है।
- **विवर्तनिक प्लेट का संचलन (Tectonic plate movement):** पृथ्वी के मेंटल के भीतर गतिविधियों के कारण निचली महासागरीय पर्पटी के पिघलने से समुद्री अधस्तल का विस्तार होता है। जब प्लेटों का विस्तार होता है, तो ये मैग्मा को नीचे से ऊपर आने देती हैं, जहां यह मैग्मा ठंडा होने लगता है और एक नवीन महासागरीय पर्पटी का निर्माण करता है। चूंकि समय के साथ इस प्रक्रिया का दोहराव होता रहता है इसलिए महासागरीय पर्पटी के विस्तार की यह प्रक्रिया जारी रहती है। वितलीय मैदानों का अस्तित्व एक प्रकार के आवरण के रूप में होता है, जो समय के साथ महासागरीय कटकों और सागरीय संस्तरों की ऊबड़ खाबड़ पर्पटी को समतल करते रहते हैं।

महाद्वीपीय मैदानों की भांति, वितलीय मैदान भी विभिन्न उच्चावच के लक्षणों को दर्शाते हैं, जैसे:

- **अंतः समुद्री पर्वत श्रेणी या कटक (Submarine Ridges):** ये महासागरीय जल के भीतर विद्यमान विशाल पर्वतीय तंत्र हैं। ये रेखीय मेखला के समान हैं, जो महासागरों के मध्य स्थित हैं। अतः इन्हें मध्य-महासागरीय कटक भी कहा जाता है। उदाहरण के लिए, मध्य-अटलांटिक कटक। कुछ स्थानों पर कटक की चोटियां जल की सतह से ऊपर आ जाती हैं और द्वीपों का निर्माण करती हैं।
- **समुद्री टीला (Seamounts)**: यह नुकीले शिखरों वाला एक पर्वत है, जो समुद्री तली से ऊपर की ओर उठता है, किंतु महासागरों की सतह तक नहीं पहुंच पाता। समुद्री टीले ज्वालामुखी के द्वारा उत्पन्न होते हैं। उदाहरण के लिए, एम्पेरर समुद्री टीला।
- **निमग्न द्वीप (Guyots):** समुद्र तल से ऊपर उठने वाली ज्वालामुखी की चोटी जब अपरदन के कारण समतल हो जाती है और जल से ढक जाती है, तो उसे निमग्न द्वीप कहा जाता है।

गहन समुद्री अन्वेषण गतिविधियों में यह पाया गया है कि वितलीय मैदानों में बहुत अधिक जैव विविधता पाई जाती है। साथ ही, भविष्य में इन मैदानों से कच्चे तेल का निष्कर्षण तथा लौह, मैंगनीज, तांबा, कोबाल्ट और निकल का खनन किया जा सकता है।

6. What are the geographical and climatic conditions required for tea cultivation? In this context, discuss the reasons for the introduction of tea cultivation in the Duars region of the Himalayas by the British. (150 words) 10

चाय की खेती के लिए आवश्यक भौगोलिक और जलवायविक दशाएं क्या हैं? इस संदर्भ में, अंग्रेजों द्वारा हिमालय के दुआर क्षेत्र में चाय की खेती शुरू करने के कारणों की विवेचना कीजिए।

दृष्टिकोण:

- चाय की खेती के लिए आवश्यक अनुकूल भौगोलिक और जलवायविक दशाओं पर प्रकाश डालिए।
- हिमालय के दुआर क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा चाय की खेती क्यों शुरू की गई थी, विवेचना कीजिए।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

चाय दुनिया में सबसे लोकप्रिय पेय पदार्थों में से एक है। भारत विश्व के चाय के सबसे बड़े उपभोक्ताओं में से एक है। भारत में चाय की खेती करने वाले प्रमुख क्षेत्र पूर्वोत्तर (असम सहित), उत्तर बंगाल (दार्जिलिंग जिला और दुआर क्षेत्र) और दक्षिण भारत में नीलगिरी पर्वत हैं।

चाय की खेती के लिए आदर्श भौगोलिक और जलवायविक दशाएं इस प्रकार हैं:

- **तापमान:** इसकी वृद्धि के लिए आदर्श तापमान 20°-30°C होता है तथा 35°C से अधिक तापमान और 10°C से कम तापमान चाय के पौधों के लिए हानिकारक होता है।
- **वर्षा:** चाय के लिए 150-300 से.मी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है, जो वर्ष भर अच्छी तरह से वितरित होनी चाहिए।
- **जलवायु:** चाय के पौधे उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में अच्छी तरह से उगते हैं। साथ ही मौसम वर्ष भर पाले से मुक्त होना चाहिए।
- **मृदा:** चाय की खेती के लिए गहरी और भली-भांति अपवाहित उपजाऊ मृदा की आवश्यकता होती है। साथ ही यह ह्यूमस और कार्बनिक पदार्थों से युक्त होनी चाहिए।
- **भूमि:** चाय की खेती के लिए अच्छी जल निकासी वाली भूमि की आवश्यकता होती है, क्योंकि चाय के पौधों के लिए जल का ठहराव हितकर नहीं है। इसके अतिरिक्त, भारी वर्षा की आवश्यकता होती है। ऐसी विशेषताओं वाली पर्वतीय ढलानें चाय की खेती के लिए अत्युत्तम होती हैं।

यद्यपि चाय भारत की स्वदेशी फसल थी, फिर भी भारत में चाय उद्योग संस्कृति की शुरुआत ब्रिटिश साम्राज्यवादियों की मदद से हुई। वर्ष 1778 में, अंग्रेजी प्रकृतिवादी सर जोसेफ बैंक्स की मदद से असम और दार्जिलिंग के क्षेत्रों में चाय की बागवानी आरंभ की गई थी। अंततः 1870 के दशक के दौरान दार्जिलिंग की पहाड़ियों में चाय बागानों से प्रेरित होकर अंग्रेजों ने हिमालय की तलहटी में स्थित दुआर क्षेत्रों को खोजा था। इस प्रकार, गज़ेल्डुबी (Gazeldubi) चाय का पहला दुआर बागान बना और वर्ष 1876 तक इस क्षेत्र में 13 बागान स्थापित हो गए थे, जिसने वर्ष 1877 में अंग्रेजों को दुआर टी प्लांटर्स एसोसिएशन की स्थापना करने के लिए प्रेरित किया।

हिमालय के दुआर क्षेत्रों में चाय की खेती आरंभ करने के कारणों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- **मध्यम ढलान:** दुआर क्षेत्रों की ऊंचाई 90 मीटर से 1750 मीटर तक होती है। ये नदियों से सटे लहरदार मैदान तथा कम ऊंचाई की पहाड़ियां होती हैं। ये चाय की खेती के लिए उपयुक्त होती हैं क्योंकि बारिश के मौसम में जलमग्नता और जलभराव के कारण फसलों को नुकसान नहीं पहुंचाता है।
- **भलीभांति वितरित वर्षा:** चूंकि दुआर क्षेत्रों में 9 महीनों में 300-400 से.मी. वार्षिक वर्षा होती है, इसलिए यह क्षेत्र चाय की खेती के लिए आदर्श जलवायविक दशाएं प्रदान करता है।
- **सुहावनी शीत ऋतु:** हिमालय के दुआर क्षेत्र चाय के बागानों के लिए उपयुक्त हैं क्योंकि इस क्षेत्र में सुहावनी शीत ऋतु के साथ-साथ वर्ष भर पाला मुक्त मौसम रहता है।
- **जैविक पदार्थों से समृद्ध मृदा:** इस क्षेत्र की मृदा रेतीली होती है तथा इसमें ह्यूमस व अलग-अलग आकार के कंकड़ों का मिश्रण पाया जाता है, जो चाय की खेती के लिए उपयुक्त होते हैं।

ध्यातव्य है कि दुआर क्षेत्र में चाय की कृषि, बढ़ती झाड़ियों, रखरखाव में निवेश की कमी और न्यूनतम मजदूरी की बढ़ती लागत के कारण आर्थिक रूप से अलाभकारी हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त, जलवायु परिवर्तन के कारण अनिश्चित वर्षा एवं उच्च तापमान के कारण कीटों के हमलों की घटनाओं में वृद्धि हुई है। इसलिए संधारणीय कृषि पद्धतियों को बढ़ावा दिए जाने तथा साथ ही साथ केंद्र व संबंधित राज्य सरकारों द्वारा चाय उद्योग का समर्थन किए जाने की आवश्यकता है।

7. Briefly bring out the distinction between flash droughts and conventional droughts. Also, examine the reasons behind the increasing vulnerability of India to flash droughts. (150 words) 10

आकस्मिक सूखा और पारंपरिक सूखा के मध्य अंतर को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए। साथ ही, आकस्मिक सूखे के प्रति भारत की बढ़ती सुभेद्यता के कारणों का परीक्षण कीजिए।

दृष्टिकोण:

- स्पष्ट कीजिए कि आकस्मिक सूखे से आप क्या समझते हैं।
- चर्चा कीजिए कि कैसे आकस्मिक सूखा, पारंपरिक सूखे से अलग है।
- आकस्मिक सूखे के प्रति भारत की बढ़ती सुभेद्यता के कारणों का उल्लेख कीजिए।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

आकस्मिक सूखे (Flash Droughts) को दो तरह से परिभाषित किया गया है। पहला, एक अल्पकालिक परंतु चरम परिस्थितियों वाली अवस्था के रूप में। इस अवस्था में मृदा की नमी पूरी तरह से समाप्त हो जाती है। दूसरा, कुछ सप्ताह तक बने रहने वाला सूखा, जिसमें सूखे की गहनता तेजी से बढ़ती जाती है। यह अवस्था वर्षण की दर सामान्य से कम होने पर सक्रिय होती है। साथ ही, असामान्य रूप से उच्च तापमान, पवन और विकिरण इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आकस्मिक सूखे की सर्वाधिक घटना मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में होती है। इसमें वर्ष 1980 से 2015 के दौरान ब्राजील, साहेल (Sahel) क्षेत्र, महान भ्रंश घाटी (Great Rift Valley) और भारत का एक बड़ा हिस्सा शामिल था।

आकस्मिक सूखा, पारंपरिक सूखे से निम्नलिखित रूप से अलग है:

- जहां एक ओर पारंपरिक सूखा, वर्षण में कमी का परिणाम है, वहीं दूसरी तरफ, आकस्मिक सूखा तब पड़ता है जब **कम वर्षण, असामान्य रूप से उच्च तापमान** (जैसे, हीट वेव्स), **सशक्त पवनें और/या विकिरण में परिवर्तन** हो। **कभी-कभी होने वाले ये तीव्र परिवर्तन,** वाष्पन-वाष्पोत्सर्जन (Evapotranspiration) की दर को तेजी से बढ़ा सकते हैं। इससे, विशेष रूप से भूदृश्य में उपलब्ध जल समाप्त हो सकता है।
- जहां एक ओर पारंपरिक सूखा क्रमिक रूप से विकसित होता है। इसका अर्थ है कि इन्हें पूर्ण गहनता के साथ विकसित होने में महीनों या कभी-कभी वर्षों लग जाते हैं। वहीं दूसरी ओर, आकस्मिक सूखा **तेजी से विकसित होता है। यह कुछ हफ्तों से लेकर महीनों तक बना रहता है। ये विशिष्ट क्षेत्रों के लिए स्थानीयकृत होते हैं।**
- आकस्मिक सूखे की उल्लेखनीय विशेषता **मृदा की शीर्ष परत से तेजी से नमी का समाप्त होना** है। नमी में यह कमी धीरे-धीरे मृदा की नीचली परतों में भी बढ़ने लगती है, जिससे फसलों और वनस्पतियों के 'जड़-क्षेत्र (Root-zone)' प्रभावित होते हैं।

एक अध्ययन के अनुसार, 21वीं सदी के अंत तक भारत में एक साथ बनने वाली गर्म और शुष्क चरम परिस्थितियों (Concurrent hot and dry extremes) की आवृत्ति लगभग पांच गुना बढ़ जाएगी। यह **आकस्मिक सूखे में लगभग सात गुना वृद्धि का कारण** बन सकता है। **आकस्मिक सूखे के प्रति भारत की बढ़ती सुभेद्यता के कारण निम्नलिखित हैं:**

- **हीट वेव की बढ़ती परिस्थितियां:** अत्यंत गर्म और शुष्क अवधियों का एक साथ निर्मित होना, आकस्मिक सूखे के प्राथमिक चालक हैं। इसके परिणामस्वरूप मृदा की नमी में कमी आती है और यह आकस्मिक सूखे के लिए अधिक अनुकूल हो जाती है।
- **मानसूनी जलवायु में परिवर्तनशीलता:** मृदा की नमी 1-2 सप्ताह के भीतर समाप्त हो जाती है। साथ ही, विभिन्न क्षेत्रों में जब वर्षा में उच्च अंतर-वार्षिक परिवर्तनशीलता, जलवायु परिवर्तन के साथ मिल जाती है, तो इससे मानसून विच्छेद होता है। इसी कारणवश मानसूनी जलवायु में संवेदनशीलता भी बढ़ रही है।
- **भूमि उपयोग के बदले हुए प्रतिरूप:** बढ़ते शहरीकरण, वनों की कटाई, निम्नीकृत मृदा, कांक्रीटीकरण आदि के कारण भूमि उपयोग का प्रतिरूप बदल रहा है। इससे आकस्मिक सूखे के प्रति भारत की संवेदनशीलता में भी वृद्धि हुई है।
- **विश्वसनीय प्रारंभिक चेतावनी/पूर्वानुमान मॉडल का अभाव:** सूखे का त्वरित आगमन और पूर्व चेतावनी के अभाव में सूखे से जुड़ी तैयारियों एवं इसके प्रभावों को कम करने के लिए बहुत कम समय मिलता है।

इस संदर्भ में, भारत को तत्काल रूप से अनुकूलन फ्रेमवर्क को अपनाने की आवश्यकता है। इससे उपलब्ध जल संसाधनों का प्रबंधन किया जा सकेगा और बीजों की ऐसी किस्मों को ढूंढा जा सकेगा जो सूखे को सहने में सक्षम हों। अन्य हितधारकों (जैसे नागरिक समाज) की भागीदारी तथा सरकार द्वारा सक्रिय उपायों के साथ बेहतर और सटीक पूर्वानुमान मॉडल अपनाए जाने की आवश्यकता है। इससे आकस्मिक सूखे से जुड़े जोखिमों को कम किया जा सकेगा।

8. Though various initiatives have been taken to ensure social security for informal workers in India, there still exist gaps which need to be plugged. Discuss.

(150 words) 10

हालांकि भारत में अनौपचारिक श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु विभिन्न पहलें शुरू की गई हैं, फिर भी कुछ कमियां मौजूद हैं जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है। चर्चा कीजिए।

Short Notes IAS
Simple and Crisp

VOLUME 1
MAY 2022 - DECEMBER 2022

CURRENT

THE REVISION ISSUE

CURRENT SHOTS 365 YEARLY MAGAZINE

CAPITAL ACCOUNT CONVERTIBILITY [CAC]

Freedom to Convert Domestic Currency for Capital Account Transactions

MYSURU DECLARATION ON SERVICE DELIVERY BY PANCHAYATS WAS SIGNED

GATI SHAKTI

A digital platform to bring 16 Ministries together for integrated planning and coordinated implementation of infrastructure connectivity projects

KEN-BETWA RIVER INTERLINKING PROJECT

FIRST PROJECT UNDER THE NATIONAL PERSPECTIVE PLAN

JUDIMA RICE WINE A HOME-MADE RICE WINE OF ASSAM'S DIMASA TRIBE BAGGED GI TAG

THAMIRABARANI CIVILIZATION

This is the oldest civilization perhaps, older than the Vaigai civilization which is believed to be 2,600 years old

A Comprehensive Current Affairs Revision Magazine for Civil Services - EPFO - RRB - SSC - NDA - CDS and All Other Competitive Exams.

दृष्टिकोण:

- स्पष्ट कीजिए कि सामाजिक सुरक्षा से आप क्या समझते हैं।
- भारत में अनौपचारिक श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए की गई विभिन्न पहलों का उल्लेख कीजिए।
- अनौपचारिक श्रमिकों के प्रति भारत की सामाजिक सुरक्षा नीतियों में मौजूद कमियों पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
- इस संदर्भ में आगे की राह के माध्यम से सुझाव दीजिए।

उत्तर:

सामाजिक सुरक्षा का अर्थ है स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच सुनिश्चित करना और विशेष रूप से वृद्धावस्था, बेरोजगारी, बीमारी, अशक्तता, काम के दौरान लगने वाली चोट, मातृत्व या घर में कमाने वाले व्यक्ति की हानि/मृत्यु के मामलों में आय सुरक्षा प्रदान करना है।

भारत में अनौपचारिक श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु विभिन्न पहलों में शामिल हैं:

- **सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020:** इसमें प्रसूति प्रसुविधा अधिनियम, 1961; उपदान संदाय अधिनियम,1972; कर्मचारी प्रतिकर अधिनियम, 1923, आदि जैसे विभिन्न **अधिनियम शामिल हैं।** साथ ही, जननी सुरक्षा योजना, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना जैसी योजनाएं भी इसमें **शामिल हैं।**
- **ई-श्रम पोर्टल:** यह असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों से जुड़ा भारत का पहला राष्ट्रीय डेटाबेस है। इसके माध्यम से असंगठित क्षेत्र के श्रमिक विभिन्न सामाजिक सुरक्षा और रोजगार-आधारित योजनाओं के लाभ भी ले सकते हैं।
- **प्रधान मंत्री श्रम योगी मान-धन योजना:** यह उन असंगठित श्रमिकों के लिए एक स्वैच्छिक अंशदायी योजना है, जो राष्ट्रीय पेंशन योजना (NPS), कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) या कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ESIC) योजना के अंतर्गत नहीं आते हैं।
- **प्रधान मंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना:** इसके अंतर्गत असंगठित श्रमिकों को 2 लाख रुपये का जीवन बीमा कवर प्रदान किया जाता है।
- **प्रधान मंत्री सुरक्षा बीमा योजना:** यह असंगठित श्रमिकों को दुर्घटना के कारण होने वाली मृत्यु या पूर्ण दिव्यांगता पर 2 लाख रुपये और आंशिक दिव्यांगता पर 1 लाख रुपये का बीमा कवर प्रदान करती है।
- **प्रधान मंत्री किसान मानधन योजना और प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि योजना:** इसके अंतर्गत लघु एवं सीमांत किसानों को क्रमशः पेंशन और आय सहायता प्रदान की जाती है।

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण के अनुसार, **अनौपचारिक क्षेत्रक में लगभग 90% श्रमिक हैं।** हालांकि, **भारत में अनौपचारिक क्षेत्रक के आधे से अधिक श्रमिक** जीवन बीमा, स्वास्थ्य बीमा और पेंशन जैसी **किसी भी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा का लाभ नहीं ले सकते हैं। यह स्थिति अनौपचारिक श्रमिकों के प्रति भारत की सामाजिक सुरक्षा नीतियों में विभिन्न कमियों के कारण है:**

- **सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020 में कमियां:**
  - **न्यूनतम राष्ट्रीय लाभ नीति का अभाव (Lack of a minimum national benefit policy):** वर्तमान में सामाजिक सुरक्षा प्रावधानों से संबंधित अलग-अलग सीमाएं विद्यमान हैं। अन्य बातों के अतिरिक्त, सामाजिक सुरक्षा श्रमिक द्वारा अर्जित वेतन और उद्यमों में श्रमिकों की कुल संख्या पर निर्भर करती है।
  - **उत्तरदायित्व की कमी (Lack of accountability):** असंगठित कामगारों के पंजीकरण का उत्तरदायित्व जिला प्रशासन का होता है, लेकिन विलंबित पंजीकरण के लिए यह उत्तरदायी नहीं है।
  - **अधीनस्थ विधान (Subordinate legislation):** कार्यपालिका के विवेकाधिकार के माध्यम से इस संहिता के महत्वपूर्ण प्रावधानों को परिभाषित और पुन:संशोधित किया जा सकता है।
  - **परिभाषाओं का अतिव्यापन (Overlapping):** उदाहरण के लिए, ऐप-आधारित टैक्सी एग्रीगेटर के लिए काम करने वाला ड्राइवर एक ही समय में गिग, प्लेटफॉर्म और असंगठित श्रमिक, तीनों श्रेणियों में शामिल होता है। इससे, योजनाओं के कार्यान्वयन के समय भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
- **योजनाओं में अन्य कमियां:**
  - **खंडित या अपूर्ण प्रशासन प्रणाली (Fragmented administration systems):** सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को केंद्र और राज्य स्तर पर कई मंत्रालयों और विभागों द्वारा चलाया जाता है।

- **लाभार्थियों का लाभ से वंचित रह जाना (Exclusion errors):** प्रमाणीकरण के लिए आधार कार्ड की शुरुआत की गई है। ऐसे में खराब इंटरनेट कनेक्टिविटी आदि के कारण कई पात्र लाभार्थी योजनाओं का लाभ प्राप्त नहीं कर पाते हैं।
- **लाभार्थियों में जागरूकता कम होना (Low awareness among beneficiaries):** इसका कारण अधिकांश अनौपचारिक श्रमिकों का निरक्षर होना और सूचना प्रणालियों तक उनकी पहुंच संभव नहीं होना है।
- **पात्रता राशियों के नियमित संशोधन का अभाव (Lack of regular revision of entitlement amounts):** उदाहरण के लिए, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना के तहत प्रदान की गई राशि को पिछली बार वर्ष 2006-07 में, 60-79 वर्ष आयु वर्ग के लिए संशोधित किया गया था।

इन कमियों को पूरा करने के लिए बहु-आयामी हस्तक्षेपों की आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिए, सभी श्रमिकों के लिए **सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध कराना,** चाहे उनका वेतन, उद्यम का आकार और मूल स्थान कुछ भी हो। साथ ही, मजबूत निगरानी और प्रवर्तन तंत्र के माध्यम से **श्रम कानूनों का अनुपालन भी सुनिश्चित करना होगा।** इसके अतिरिक्त, श्रमिक संघों और अन्य नागरिक समाज संगठनों के सहयोग से उनके अधिकारों के बारे में **जागरूकता पैदा करनी होगी।**

9. Critically assess the government's move on raising the age of marriage of women in India from 18 to 21 years. (150 words) 10

भारत में महिलाओं के विवाह की आयु 18 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष करने के सरकार के कदम का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

दृष्टिकोण:

- भारत में विवाह की आयु के संबंध में किए गए हालिया संशोधन के साथ उत्तर प्रारंभ कीजिए।
- महिलाओं के विवाह की आयु बढ़ाने वाले सरकार के कदम से होने वाले लाभों को वर्णित कीजिए।
- इस कदम के दोषों पर भी प्रकाश डालिए।
- आगे की राह के साथ निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

वर्ष 1978 से पूर्व महिलाओं के लिए विवाह की आयु 15 वर्ष थी। वर्ष 1978 में बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम (CMRA) में संशोधन किया गया, जिसके बाद महिलाओं के विवाह की आयु को बढ़ाकर 18 वर्ष कर दिया गया। हाल ही में, सरकार द्वारा **बाल विवाह प्रतिषेध (संशोधन) विधेयक, 2021** प्रस्तुत किया गया था। इसमें महिलाओं के विवाह की आयु को मौजूदा 18 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष किए जाने का प्रस्ताव किया गया था।

विवाह के समय कानूनी आयु को बढ़ाने के लाभ:

- **समान स्थिति और अवसर को बढ़ावा मिलेगा:** लैंगिक असमानता और लैंगिक भेदभाव से निपटने के लिए यह कदम काफी महत्वपूर्ण है। यह महिलाओं एवं लड़कियों के स्वास्थ्य, कल्याण और सशक्तीकरण सुनिश्चित करने हेतु पर्याप्त उपायों को लागू करने के लिए भी महत्वपूर्ण है।
- **बाल विवाह में और भी कमी लाई जा सकती है: राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (NFHS-5) 2019-21** के अनुसार, 20-24 वर्ष के आयु वर्ग की शहरी क्षेत्रों की 14.7% और ग्रामीण क्षेत्रों की 27% महिलाओं का विवाह 18 वर्ष की आयु से पहले हो गया था। **इस सर्वेक्षण के अनुसार बाल विवाह में बेहद मामूली कमी आयी है।** यह वर्ष 2015-16 में 27% से घटकर वर्ष 2019-20 में 23% रह गया है।
- **महिला श्रम भागीदारी में सुधार होगा:** विवाह और घरेलू जिम्मेदारियां श्रम बल में महिलाओं की कम भागीदारी के लिए उत्तरदायी प्रमुख कारक हैं। विवाह की आयु बढ़ने के कारण वे विवाह से पहले और विवाह के बाद में, श्रम बाजार में भाग लेने में सक्षम हो सकती हैं।
- **समग्र कल्याण को बढ़ावा मिलेगा:** यदि विवाह के समय अधिक आयु होगी तो प्रजनन दर में कमी आएगी, अर्थात् इन दोनों में सकारात्मक संबंध होता है। आर्थिक स्वतंत्रता सामाजिक बुराइयों से निपटने के लिए अधिक सामर्थ्य प्रदान करती है। साथ ही, परिवार की पोषण स्थिति, स्वास्थ्य और आर्थिक कल्याण पर इसका अत्यधिक व्यापक प्रभाव पड़ता है।

- **संबद्ध लाभ:** विवाह की कानूनी आयु बढ़ाना अन्य लैंगिक असमानताओं को दूर करने का एक अप्रत्यक्ष प्रयास है। अन्य लैंगिक असमानताओं में स्कूल छोड़ने की दर; उचित समय से पहले गर्भधारण के कारण होने वाले स्वास्थ्य जोखिम और बच्चों की परवरिश संबधी तैयारियां शामिल हैं।

विवाह की कानूनी आयु बढ़ाने हेतु प्रस्तावित कानून के दोष:

- यह तर्क दिया जाता है कि गरीब परिवारों में 21 वर्ष तक की युवा लड़कियों को शिक्षित करने का दबाव होता है। **इससे देश में लिंग चयनित गर्भपात (Sex-selective abortion) की दर में वृद्धि हो सकती है।**
- यह तर्क दिया जाता है कि अधिकांश कानूनों के लिए आयु का मापदंड आमतौर पर 18 वर्ष ही है। उदाहरण के लिए, सहमति से संभोग करने की आयु या गर्भपात करने का अधिकार आदि। **सभी अनुपूरक कानूनों में भी आयु के संदर्भ में एकरूपता लाना** ही बुद्धिमानी होगी।
- बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है जो स्पष्ट रूप से यह उल्लेख करता हो कि **यह कानून इस मुद्दे पर बने किसी अन्य कानून को प्रतिस्थापित कर देगा।** उदाहरण के लिए, एक विवाद इस संबंध में भी उत्पन्न हो गया है कि पॉक्सो अधिनियम को बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम के पूरक के रूप में संशोधित करने की आवश्यकता है अथवा नहीं।
- विधि आयोग ने सुझाव दिया था कि विवाह करने के लिए **पुरुषों और महिलाओं दोनों की** न्यूनतम कानूनी आयु 18 वर्ष होनी चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह उनके मताधिकार के अधिकार के अनुरूप है।

स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन के संदर्भ में, **समान अवसरों के मूल सामाजिक मुद्दों** को समझने की आवश्यकता है। विवाह एक संस्था है, जिस पर न केवल आयु बल्कि आर्थिक प्रतिरूप, हिंसा की संभावना, यौन स्वास्थ्य जैसे कई कारकों का प्रभाव पड़ता है। इसलिए, कानून के माध्यम से केवल विवाह की कानूनी आयु को बढ़ाना, लैंगिक समानता के व्यापक मुद्दों का समाधान करने के लिए पर्याप्त नहीं है। इसके अतिरिक्त, विवाह की कानूनी आयु बढ़ाने के साथ समान शैक्षिक और आर्थिक अवसरों के साथ-साथ महिलाओं की सुरक्षा भी सुनिश्चित की जानी चाहिए।

10. Reservation for locals in private sector has again brought the debate around regionalism into focus. In this context, examine whether regionalism is a threat to national integration. (150 words) 10

निजी क्षेत्रक में स्थानीय लोगों के लिए आरक्षण के मुद्दे ने क्षेत्रवाद के इर्द-गिर्द होने वाली बहस को पुन: केंद्र में ला दिया है। इस संदर्भ में, परीक्षण कीजिए कि क्या क्षेत्रवाद राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा है।

दृष्टिकोण :

- स्थानीय लोगों के लिए आरक्षण के संदर्भ के साथ उत्तर प्रारंभ कीजिए।
- परीक्षण कीजिए कि क्या क्षेत्रवाद राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा है।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

हाल ही में, हरियाणा राज्य सरकार ने निजी क्षेत्रक की नौकरियों में स्थानीय लोगों को 75 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करने वाला एक कानून पारित किया। यह कानून 30,000 रुपये से कम मासिक वेतन वाली निजी क्षेत्र की नौकरियों पर लागू होगा। यह कानून, वर्ष 2019 में आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा पारित किए गए इसी तरह के एक कानून से प्रेरित था। इस कदम ने अन्य राज्यों में भी स्थानीय लोगों के लिए निजी क्षेत्रक की नौकरियों में कोटा आरक्षित करने के आह्वान को और मजबूत कर दिया है। इस मुद्दे ने क्षेत्रवाद से संबंधित बहस को एक बार पुनः केंद्र में ला दिया है।

राष्ट्रीय एकता के लिए खतरे के रूप में क्षेत्रवाद:

- यदि किसी **विशेष क्षेत्र के प्रति निष्ठा** राष्ट्र के प्रति निष्ठा से अधिक मजबूत होती है, तो राष्ट्रीय एकता पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इस प्रकार, यह राष्ट्र की प्रगति और एकता के लिए खतरा उत्पन्न कर सकता है।
- यह **स्थानीय लोगों के बीच अन्य क्षेत्रों के लोगों के प्रति घृणा उत्पन्न कर** सकता है। नतीजतन, यह क्षेत्रीय/स्थानीय विभाजन को बढ़ावा दे सकता है तथा पहचान की राजनीति को प्रेरित कर सकता है। प्रायः इसका अनुचित लाभ उठाया जा सकता है और वोट बैंक की राजनीति हेतु इसका इस्तेमाल किया जा सकता है।

- इसके परिणामस्वरूप, विकास योजनाओं को भी असमान रूप से क्रियान्वित किया जा सकता है। इससे **असंतुलित क्षेत्रीय विकास** को बढ़ावा मिलेगा जिससे क्षेत्रवादी और अलगाववादी मांगें उत्पन्न हो सकती हैं। जब क्षेत्रीय मांगों के लिए आंदोलन किए जाते हैं, तो कानून-व्यवस्था की स्थिति अव्यवस्थित हो जाती है। इसके परिणामस्वरुप हिंसा भी भड़क सकती है। जब क्षेत्रवाद की मांग में हिंसक अभिव्यक्तियां शामिल होती हैं, तो ये **आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों** को बढ़ावा देती हैं। यहां तक कि इससे बाहरी गैर-राज्य अभिकर्ताओं जैसे कि आतंकवादी समूहों, चरमपंथी समूहों द्वारा क्षेत्रीय मुद्दों में दखल देने और जनता को उकसाकर व्यवधान उत्पन्न करने की संभावना भी बढ़ सकती है।

हालांकि, क्षेत्रवाद केवल एक विघटनकारी शक्ति नहीं है और न ही यह राष्ट्रीय एकता का विरोधी है। क्षेत्रवाद और राष्ट्रीय एकता दोनों एक रचनात्मक साझेदारी में एक साथ विद्यमान हो सकते हैं जैसा कि निम्नलिखित तर्कों से स्पष्ट है:

- **लोगों के बीच एकजुटता:** यह किसी विशेष क्षेत्र में **समूह के लोगों के मध्य एकजुटता** का कारण बन सकती है। किसी क्षेत्र में रहने वाले लोग अपने मतभेदों को दूर करते हुए अपने सामूहिक हितों की रक्षा के लिए एकजुट हो सकते हैं।
- **पहचान का स्रोत**: समकालीन वैश्वीकृत विश्व में बढ़ती अनिश्चितता को देखते हुए, क्षेत्रवाद लोगों के बीच पहचान का स्रोत बन गया है। ऐसी पहचानों का होना भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।
- **प्रतिस्पर्धा को प्रेरित करना: क्षेत्रवाद किसी क्षेत्र के लोगों के बीच प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दे सकता है।** यह उन्हें अपने क्षेत्र की स्थिति में सुधार करने हेतु बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित कर सकता है।
- **राष्ट्र निर्माण को बढ़ावा देना**: यदि क्षेत्रवाद संघीय तत्वों को समायोजित करता है तो यह राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। क्षेत्रीय हित सदैव राष्ट्रीय हित के विरुद्ध नहीं होते हैं। वास्तव में, यह विभिन्न संस्कृतियों के एकीकरण के सिद्धांत (**salad-bowl theory**) को वास्तविक रूप से साकार करने में मदद करता है।
- **आत्मनिर्णय का अधिकार:** राज्य की स्थिति (statehood) या राज्य की स्वायत्तता के संदर्भ में क्षेत्रीय पहचान उस विशेष क्षेत्र के लोगों को आत्म-निर्णयन प्रदान करती है। इससे वे सशक्त एवं बेहतर अनुभव करते हैं।

क्षेत्रवाद सदैव राष्ट्रीय एकता में बाधक नहीं होता है। राष्ट्रीय एकता के लिए महत्वपूर्ण शर्त यह है कि राष्ट्रवाद विभिन्न प्रकार की क्षेत्रीय उप-राष्ट्रीयताओं को एक साथ बनाए रखने में सक्षम हो। दूसरे शब्दों में, **क्षेत्रवाद और राष्ट्रवाद के मध्य बेहतर समन्वय होना चाहिए।**

11. Explain how agricultural surplus, growth of crafts and trade, and growing population led to the second urbanisation in ancient India. (250 words) 15

व्याख्या कीजिए कि किस प्रकार कृषि अधिशेष, शिल्प और व्यापार की वृद्धि तथा बढ़ती जनसंख्या के कारण प्राचीन भारत में द्वितीय नगरीकरण हुआ है।

दृष्टिकोण :

- प्राचीन भारत में द्वितीय नगरीकरण के संक्षिप्त परिचय के साथ उत्तर प्रारंभ कीजिए।
- व्याख्या कीजिए कि किस प्रकार कृषि, शिल्प, व्यापार तथा बढ़ती जनसंख्या ने द्वितीय नगरीकरण में सहायता की।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

हड़प्पा संस्कृति की नियोजित और संपन्न नगरीय बस्तियों से यह स्पष्ट होता है कि भारत में प्रथम नगरीकरण की शुरुआत लगभग 5000 वर्ष पूर्व हुई थी। लगभग 1500 ईसा पूर्व, आर्यों के आगमन के साथ ये नगरीय केंद्र समाप्त हो गए और इन्हें आर्यों प्रतिस्थापित कर दिया गया। आर्य पशुपालक और चरवाहे थे। लगभग 1000 ईसा पूर्व इन उत्तर-वैदिक लोगों का पूर्व की ओर प्रवास भारत में पुनः भौतिक संस्कृति के विकास को दर्शाता है। जैसे-जैसे वे पूर्व की ओर बढ़े, वैसे-वैसे उन्हें घने जंगलों का सामना करना पड़ा। **इन जंगलों को साफ करने में लोहे की महत्वपूर्ण भूमिका रही।** इसके अतिरिक्त, लोहे की उपलब्धता (जिससे हथियार भी बनाये जा सकते थे) ने मगध और अवंती जैसे मजबूत साम्राज्यों के उदय में मदद की। परिणामस्वरूप इसने, **द्वितीय नगरीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।**

प्राचीन भारत में द्वितीय नगरीकरण के लिए उत्तरदायी कारकों में शामिल हैं:

- **कृषि अधिशेष की भूमिका:**
  - लोहे से निर्मित हल के फलक के उपयोग और आर्द्र भूमि पर धान रोपाई की तकनीक के विकास के साथ उपजाऊ गंगा घाटी में कृषि उत्पादकता में कई गुना वृद्धि हुई।

- अत्यधिक खाद्य उत्पादन ने विशाल आबादी को बनाए रखना और वृहत बस्तियों को स्थापित करना संभव बनाया। इससे खाद्य उत्पादन में शामिल नहीं होने वाले सामाजिक समूहों का भी उद्भव हुआ। इसके अतिरिक्त, इससे एक बड़ी स्थायी सेना को तैयार करने में मदद मिली जो नगरीकरण के लिए आवश्यक व्यापार और वाणिज्य के विकास हेतु एक स्थिर शासन प्रदान कर सके।

- **शिल्प और व्यापार का विकास:**
  - अन्य सामाजिक समूहों जैसे कारीगरों, सौदागरों और व्यापारियों के उदय से भौतिक संस्कृति का उदय हुआ। भौतिक संस्कृति ने वस्तुओं के व्यापार को अनिवार्य बनाया और परिणामस्वरूप बाजार स्थलों का विकास हुआ। इन बाजार स्थलों के चारों ओर विभिन्न नगरों का विकास हुआ। उदाहरण के लिए, वैशाली में एक समय मिट्टी के बर्तनों की लगभग 500 दुकानें थीं। **कारीगरों और व्यापारियों दोनों को स्थानीय मुखियाओं द्वारा श्रेणियों (guilds) में संगठित किया गया था। इनमें** लोहार, बढ़ई आदि जैसी विभिन्न श्रेणियां शामिल होती थीं। शिल्प में यह विशेषज्ञता श्रेणी (guilds) प्रणाली के साथ-साथ स्थानीयकरण के कारण विकसित हुई थी।
- प्रारंभ में इन बाजारों को **वस्तु विनिमय प्रणाली** (**barter system**) के आधार पर संचालित किया जाता था। बाद में, **सिक्का प्रणाली (Coin system) विकसित की गई** जिसके कारण वस्तुओं के विस्तार और पहुंच में अधिक वृद्धि हुई। इससे लंबी दूरी के व्यापार में भी वृद्धि हुई, जिसके परिणामस्वरूप नगरीय केंद्रों को अधिक राजस्व प्राप्त हुआ। इसके साथ ही इन केंद्रों का और अधिक विस्तार हुआ।
- **बढ़ती जनसंख्या :**
  - **नगरीय केंद्रों में वैकल्पिक रोजगार और आजीविका के अवसरों की** उपलब्धता से अनेक **नए नगरीय वर्गों का विकास हुआ। इनमें दुकानदारों, खुदरा विक्रेताओं, धोबी, सफाई कर्मियों आदि के विकास के साथ-साथ** गहपति, धनवान जमींदारों और **श्रेष्ठियों** (धन उधार देने में शामिल धनी व्यवसायी) जैसे सामाजिक अभिजात वर्ग के उदय में भी सहायता मिली।
  - कानूनों के संकलन और बहीखाता की आवश्यकता के कारण हड़प्पा सभ्यता के बाद पहली बार लोगों ने **लेखन कला** (writing) का विकास किया।
  - बढ़ती जनसंख्या ने बौद्ध धर्म और जैन धर्म जैसे नए धर्मों की स्थापना में सहायता की, जिससे नगरीकरण की गति में और अधिक वृद्धि हुई।

नगरीकरण की द्वितीय लहर ने एक मजबूत मौर्य साम्राज्य के गठन का भी आधार निर्मित किया। यह साम्राज्य अपनी आधुनिक एवं कुशल अर्थव्यवस्था और समाज के लिए प्रसिद्ध था। साथ ही, यह सिल्क रूट, ग्रैंड ट्रंक रोड और दक्षिणापथ के विकास के लिए भी जाना जाता था, जिनके माध्यम से संपूर्ण भारत के साथ-साथ विश्व के विभिन्न भागों में वस्तुओं का व्यापार किया जाता था।

12. India of the 18th century failed to make progress economically, culturally and socially at a pace, which would have saved the country from collapse. Comment.

(250 words) 15

18वीं शताब्दी का भारत आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से उस गति से प्रगति करने में विफल रहा, जो देश को पतन से बचा सकता था। टिप्पणी कीजिए।

दृष्टिकोण :

- 18वीं शताब्दी के भारत का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
- रेखांकित कीजिए कि 18वीं शताब्दी के दौरान भारत आर्थिक, सामाजिक या सांस्कृतिक रूप से प्रगति करने में किस प्रकार विफल रहा, जिसके कारण अंततः ब्रिटिश साम्राज्यवाद को बढ़ावा मिला।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

मुगलों के पतन के पश्चात् 18वीं शताब्दी का दौर भारत में राजनीतिक रूप से काफी अशांत था। यहां अखिल भारतीय स्तर पर कोई केंद्रीकृत शासन स्थापित नहीं था। कई स्वतंत्र क्षेत्रीय साम्राज्यों का उदय हुआ और उनकी आपसी प्रतिद्वंद्विता ने विनाशकारी विदेशी आक्रमणों को बढ़ावा दिया।

18वीं शताब्दी के दौरान भारत पर कई विदेशी आक्रमण हुए और इनसे काफी विध्वंस हुआ। इनके कारण भारत सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से प्रगति करने में विफल रहा, जैसा कि नीचे उल्लिखित है:

1. **सामाजिक रूप से प्रगति करने में विफलता:**
   - **सामंती सामाजिक संबंध:** पश्चिमी देशों में पुनर्जागरण और ज्ञान के उदय के साथ सामंतवाद धीरे-धीरे कमजोर हो रहा था। इसके विपरीत, भारतीय समाज अभी भी मुगल शासन के अधीन सामंती और शोषक सामाजिक संबंधों में उलझा हुआ था।
   - **सामाजिक असमानता:** एक तरफ जहां धनी और शक्तिशाली कुलीन लोग विलासितापूर्ण और आराम परस्त जीवन व्यतीत करते थे, वहीं दूसरी ओर, पिछड़े, उत्पीड़ित और गरीब किसान कठिनाई से निर्वाह स्तर पर जीवन व्यतीत कर रह रहे थे।
   - **कठोर जाति व्यवस्था:** जाति सामाजिक जीवन की केंद्रीय विशेषता थी। इसके कारण 18वीं शताब्दी तक लोगों के मध्य कठोर विभाजन हो गया था। साथ ही इसने सामाजिक स्तरीकरण प्रणाली में स्थायी रूप से लोगों का स्थान निर्धारित कर दिया था। जाति व्यवस्था ने मतभेदों को और मजबूत किया। इसके कारण भारतीय समाज एक साथ एकजुट रहने में विफल रहा।
   - **महिलाओं की अधीनता:** महिलाओं में न केवल असमानता विद्यमान थी, बल्कि ये पूर्णतया अधीन भी थीं। उदाहरण के लिए, सती प्रथा आदि का प्रचलन था। उसी समय, पश्चिम में महिलाओं की स्थिति में सुधार हो रहा था।

2. **सांस्कृतिक रूप से प्रगति करने में विफलता:**
   - **सांस्कृतिक गतिरोध:** 18वीं शताब्दी के भारतीय, पश्चिम के वैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास, पुनर्जागरण के उदय, राजनीतिक और आर्थिक उपलब्धियों से अनभिज्ञ थे। उदाहरण के लिए, शासक अंधविश्वासी थे तथा वैज्ञानिक नवाचारों और खोजों के प्रति आशंकित रहते थे। इसके कारण रक्षा प्रणाली का निम्न आधुनिकीकरण हुआ और अंततः विदेशी आक्रमण सफल हुए।
   - **वैज्ञानिक शिक्षा का अभाव:** समय की मांग के अनुसार परंपरागत शिक्षा को अद्यतन नहीं किया गया था। उसी समय, पश्चिम नित नई ऊंचाइयों को छू रहा था और प्रगति कर रहा था। उदाहरण के लिए, भारत की शिक्षा प्रणाली को भौतिक और प्राकृतिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी और भूगोल के अध्ययन से वंचित रखा गया था वहीं पश्चिम में इन विषयों का अध्ययन किया जा रहा था।

3. **आर्थिक रूप से प्रगति करने में विफलता:**
   - **कृषि का पिछड़ापन**: भारतीय कृषि तकनीकी रूप से पिछड़ी और स्थिर थी। इसके कारण उत्पादन सीमित होता था, जो घरेलू आबादी की खाद्य आपूर्ति के लिए पर्याप्त नहीं था।
   - **भारतीय नगरों का पतन:** भारत में कई समृद्ध नगर उद्योग के केंद्र के रूप में विकसित हो रहे थे। विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा इन्हें लूटा गया और इन्हें बर्बाद कर दिया गया। उदाहरण के लिए, दिल्ली को नादिर शाह द्वारा; लाहौर, दिल्ली और मथुरा को अहमद शाह अब्दाली द्वारा; और आगरा को जाटों द्वारा लूटा गया था।
   - **आंतरिक और विदेशी व्यापार में गिरावट:** 18वीं शताब्दी के दौरान भारत के राजनीतिक और आर्थिक विभाजन के कारण स्थानीय आपूर्ति को बढ़ावा मिला। इसके अतिरिक्त, शासकों द्वारा उत्पादन विधियों के आधुनिकीकरण पर कम बल दिया गया। उसी समय पश्चिम ने अपने उत्पादन के साधनों का आधुनिकीकरण किया था।

इस प्रकार, 18वीं शताब्दी के दौरान भारत अपनी परंपराओं में उलझा हुआ था। यह उस वैज्ञानिक ज्ञान को आत्मसात करने में विफल रहा जिसे पश्चिम द्वारा दिया जा सकता था। सत्ता और धन के लिए संघर्ष, आर्थिक गिरावट, सामाजिक पिछड़ेपन और सांस्कृतिक अधीनता का तात्कालिक भारतीयों पर गहरा और हानिकारक दुष्प्रभाव पड़ा था। इन सभी कारकों ने प्लासी (1757), बक्सर (1764) आदि की लड़ाई के उपरांत ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के राजनीतिक प्रभुत्व को उजागर किया, जिससे अखिल भारतीय औपनिवेशिक शासन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

13. The withdrawal of the Civil Disobedience Movement triggered a two-stage debate on the strategic course of India's freedom struggle. Elucidate. (250 words) 15

सविनय अवज्ञा आंदोलन की वापसी ने भारत के स्वतंत्रता संघर्ष की रणनीतिक कार्यप्रणाली के संबंध में दो-चरणों वाली बहस को आरंभ कर दिया। स्पष्ट कीजिए।

दृष्टिकोण:

- सविनय अवज्ञा आंदोलन की वापसी की पृष्ठभूमि के साथ उत्तर का परिचय दीजिए।
- भारत के राष्ट्रीय आंदोलन की कार्यप्रणाली पर भावी रणनीति के बारे में बहस को स्पष्ट रूप से प्रमाणित कीजिए।

- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस लेने के बाद राष्ट्रवादी खेमे में भावी रणनीति पर दो चरण वाली बहस आरंभ हुई। इस बहस के दो पहलू थे। इनमें से एक, सत्ता में भागीदारी के रूप में संवैधानिक साधनों को अपनाना और एक रणनीति के रूप में चुनाव लड़ना था। दूसरा पहलू, राष्ट्रवादी आंदोलन की गति को बनाए रखने के लिए गैर-संवैधानिक जन संघर्ष को जारी रखना था।

पहले चरण की बहस:

इसमें **तीन दृष्टिकोण** सामने आए। पहले दो परिप्रेक्ष्य पारंपरिक अनुक्रियाएं थीं, जबकि तीसरा दृष्टिकोण कांग्रेस के भीतर एक मजबूत वामपंथी प्रवृत्ति का उदय था।

ये दृष्टिकोण हैं:

- **गांधीवादी तर्ज पर रचनात्मक कार्यों** के माध्यम से जन शक्ति को संगठित करना चाहिए।
- **संवैधानिक तरीके से संघर्ष किया जाना चाहिए और 1934 में होने वाले केंद्रीय विधायिका के चुनाव में भाग लेना चाहिए।** इसकी वकालत **एम. ए. अंसारी, आसफ अली, भूलाभाई देसाई और बी.सी. रॉय** ने की थी। इन स्वराजियों का तर्क था कि वर्तमान समय में राजनीतिक उदासीनता का माहौल बना हुआ है। इस माहौल में, चुनाव और परिषद में शामिल होकर किए जाने वाले कार्य का इस्तेमाल लोगों के राजनीतिक हित और मनोबल को बनाए रखने के लिए किया जा सकता है।
- **जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस के भीतर एक धड़ा मजबूत वामपंथी प्रवृत्ति के रूप में सामने आया। यह गांधीवादी तर्ज पर रचनात्मक कार्य शुरू करने और परिषद में प्रवेश के माध्यम से राजनीतिक संघर्ष करने, दोनों का आलोचक था।** वामपंथियों ने तर्क दिया कि ये दोनों तरीके राजनीतिक जनादोलन को पथविमुख करेंगे और उपनिवेशवादी शासन के खिलाफ संघर्ष के मूल मुद्दे से जनता का ध्यान हटा देंगे। इसने **गैर-संवैधानिक जन संघर्ष को फिर से शुरू करने का** समर्थन किया।

इसके बाद, ब्रिटिश सरकार ने भारत सरकार अधिनियम, 1935 पेश किया। इस अधिनियम का लगभग सभी वर्गों ने विरोध किया। कांग्रेस द्वारा सर्वसम्मति से इसे अस्वीकार कर दिया गया।

दूसरे चरण की बहस:

कांग्रेस, 1935 के अधिनियम का विरोध करने के बावजूद, **1937 में प्रांतीय विधानसभा चुनावों में** एक व्यापक राजनीतिक एवं आर्थिक कार्यक्रम के आधार पर चुनाव लड़ने के लिए सहमत हुई।

हालांकि, जल्द ही वैचारिक मतभेद सामने आ गए:

- **वामपंथियों ने गतिरोध पैदा करने के उद्देश्य से परिषदों में प्रवेश का प्रस्ताव रखा** ताकि अधिनियम को अमल में लाना असंभव बनाया जा सके। उन्होंने तर्क दिया कि वे 1935 के अधिनियम का विरोध करने के लिए समान रूप से प्रतिबद्ध थे। विधायिकाओं में कार्य करना केवल एक अल्पकालिक रणनीति थी क्योंकि उस समय एक जन आंदोलन चलाने का विकल्प उपलब्ध नहीं था।
- दूसरी ओर, जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, कांग्रेस और सोशलिस्टों ने **सत्ता में भागीदारी का विरोध किया। अतः** वे 1935 के अधिनियम की कार्यप्रणाली के खिलाफ थे। उनका मत था कि यह तो बिना अधिकार के उत्तरदायित्व वहन करने जैसा होगा। साथ ही, यह जन आंदोलन के क्रांतिकारी चरित्र को भी समाप्त कर देगा। इसका प्रमुख कारण यह है कि कांग्रेस पार्टी संवैधानिक कार्यों में इतनी अधिक लिप्त हो जाएगी कि स्वतंत्रता, आर्थिक व सामाजिक न्याय और गरीबी उन्मूलन का मूल लक्ष्य पीछे छूट जाएगा।
- दीर्घकालीन रणनीति के तहत उन्होंने कांग्रेस को समाजवादी दिशा प्रदान करने की वकालत की। इसके लिए उन्होंने सुझाव दिया कि **मजदूरों और किसानों के सहयोग को प्राप्त किया जाए, उनके वर्गीय आधार पर निर्मित संगठनों को कांग्रेस से जोड़ा जाए और** इस प्रकार एक जन आंदोलन को फिर से शुरू करने की तैयारी की जाए।
- गांधी जी ने शुरू में इसका विरोध किया, लेकिन बाद में **कांग्रेस मंत्रालयों के गठन के लिए प्रयोग को मंजूरी दे दी।** 1936 के प्रारंभ में लखनऊ में और 1936 के अंत में फैज़पुर में कांग्रेस के अधिवेशन के दौरान उन्होंने चुनाव में भाग लेने का निर्णय लिया।

सत्ता में हिस्सेदारी लेना या अस्वीकृत करना समाजवाद का मुद्दा नहीं था बल्कि यह रणनीति का हिस्सा था। अंततः कांग्रेस का संकल्प 1935 के अधिनियम की अधीनता स्वीकार करना या उसके साथ सहयोग करने का नहीं था, **बल्कि इसे निष्प्रभावी**

बनाने के उद्देश्य से विधायिकाओं के अंदर और बाहर दोनों जगह इसका विरोध करने का था। फरवरी 1937 में, 11 प्रांतीय विधानसभाओं के चुनाव हुए। इन चुनावों में कांग्रेस ने **1,161 सीटों में से 716 सीटों पर जीत हासिल कर शानदार सफलता प्राप्त की।** इस तरह कांग्रेस की प्रतिष्ठा और भी बढ़ गई।

14. Throw light on the causes, course and outcomes of the Civil War, which followed the Russian Revolution. Also, bring out the reasons behind the Bolshevik victory.

(250 words) 15

रूसी क्रांति के बाद हुए गृहयुद्ध के कारणों, गतिविधियों और परिणामों पर प्रकाश डालिए। साथ ही, बोल्शेविक विजय के कारणों को भी स्पष्ट कीजिए।

दृष्टिकोण:

- रूसी गृहयुद्ध का संक्षिप्त विवरण देते हुए परिचय दीजिए।
- गृहयुद्ध के कारणों को सूचीबद्ध कीजिए।
- गृहयुद्ध की कार्यप्रणाली और परिणामों की संक्षेप में चर्चा कीजिए और बोल्शेविकों की जीत के कारणों का उल्लेख कीजिए।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

रूसी गृहयुद्ध (1918–20) अक्टूबर क्रांति के तुरंत बाद 1918 में आरंभ हुआ। यह मुख्य रूप से **बोल्शेविकों के नेतृत्व वाले "रेड्स" और बोल्शेविकों के राजनीतिक विरोधियों के गठबंधन "व्हाइट्स"** के बीच लड़ा गया था। **व्हाइट्स को ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, यू.एस. और जापान का समर्थन प्राप्त था,** जबकि रेड्स के पास आंतरिक समर्थन था। आंतरिक समर्थन कहीं अधिक प्रभावी सिद्ध हुआ।

गृहयुद्ध के कारण

- रूस के नियंत्रण को अनंतिम सरकार से छीन लेने के बाद **बोल्शेविकों के लिए सबसे पहले सत्ता पर अपनी नाजुक पकड़ को सुरक्षित करना आवश्यक था।** लेनिन ने जर्मनी के साथ शांति वार्ता करके **प्रथम विश्व युद्ध से रूस को हटा लिया।** हालांकि, वह गृहयुद्ध से नहीं बच सका।
- **लेनिन के नेतृत्व वाले बोल्शेविक समूह का विरोध करने** के लिए कई अन्य समूहों का गठन किया गया। इनमें गैर-बोल्शेविक समाजवादी, उदारवादी और राजशाही के समर्थक शामिल थे।
- व्हाइट्स में जो निजी संपत्ति के हिमायती थे उन्होंने जमीन पर कब्जा करने वाले किसानों के खिलाफ काफी सख्त रवैया अपनाया। उनकी ऐसी कार्रवाइयों की वजह से **गैर-बोल्शेविकों के प्रति लोकप्रिय जनसमर्थन और भी तेजी से घटने लगा।**
- 1918 और 1919 के दौरान समाजवादी क्रांतिकारियों और ज़ार-समर्थकों को फ्रांसीसी, अमेरिकी, ब्रिटिश और जापानी सैनिकों का समर्थन प्राप्त था। ये सभी शक्तियां **रूस में साम्यवाद के विकास की विरोधी थी।**

गृहयुद्ध की कार्यप्रणाली और परिणाम

- रूसी गृहयुद्ध **वर्ष 1918 से 1921 के आरंभ तक चला।** इस अवधि के दौरान, बोल्शेविकों को व्हाइट सेना के रूप में बड़े पैमाने पर विरोध का सामना करना पड़ा। इस सेना का नेतृत्व जार शासन के पूर्व अधिकारी कर रहे थे और इन्हें विदेशी सेना का समर्थन भी प्राप्त था।
- फिर भी, 1921 के आरंभ तक, **बोल्शेविकों ने अपने शत्रुओं को पराजित कर दिया और पूर्ण विजय प्राप्त की।**
- वर्ष 1921 में गृह युद्ध के अंत तक, **बोल्शेविक रूस की सत्ता पर अपनी पकड़ मजबूत करने में सफल रहे।**
- व्हाइट सेनाएँ तथा **रूसी जमीन पर लड़ने वाली विदेशी शक्तियां पराजित हो चुकी थीं।** लेनिन ने **अपनी छोटी सी बोल्शेविक पार्टी से लेकर रूस पर पूर्ण नियंत्रण** स्थापित करने के अपने अंतिम लक्ष्य को प्राप्त कर लिया था।
- 1921 तक, **रेड्स ने अपने आंतरिक शत्रुओं को पराजित कर दिया था और अधिकतर नए स्वतंत्र राज्यों को अपने नियंत्रण में ले लिया था।** हालांकि इसमें फिनलैंड, बाल्टिक राज्य, मोल्डावियन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक और पोलैंड शामिल नहीं थे। मोल्डावियन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक रोमानिया में शामिल हो गया और पोलैंड के साथ उन्होंने पोलिश-सोवियत युद्ध लड़ा था।

रेड्स की जीत के कारण

- **व्हाइट्स अच्छी तरह से संगठित नहीं थे** और उनके पास किसी एकल केंद्रीय नेतृत्व का अभाव था। दूसरी ओर, **रेड्स के पास ज्यादा सैनिक थे और ट्राटस्की के रूप में उनके पास एक बहुत ही योग्य नेतृत्वकर्ता था।**
- गृहयुद्ध के दौरान हुई क्रूरताओं के कारण व्हाइट्स ने **किसानों का समर्थन खो दिया।**

- **लेनिन बोल्शेविकों को** विदेशी सेना के विरुद्ध लड़ने वाले **राष्ट्रवादियों के रूप में प्रस्तुत करने में सक्षम रहा।**
- **युद्धकालीन साम्यवाद ने** बोल्शेविकों को युद्ध लड़ने के लिए **संसाधनों को बचाने में मदद की।**
- **रेड्स ने रूस के मध्य क्षेत्र पर नियंत्रण कर लिया, जहां रेलवे लाइनों का प्रसार अधिक बेहतर था।** वे व्हाइट्स की तुलना में अधिक आसानी से मोर्चों के चारों ओर सैनिकों को स्थानांतरित करने में सक्षम थे।
- वर्ष 1919 में विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद **मित्र राष्ट्रों ने रूस से बाहर निकलना आरंभ कर दिया।** गृहयुद्ध में उनकी भूमिका अपने ही लोगों के बीच अलोकप्रिय हो गई थी।

रूसी गृहयुद्ध रूस के इतिहास में एक निर्णायक क्षण था जिसने शताब्दियों से चले आ रहे जार शासन का अंत कर दिया। इसे इतिहास का सबसे खूनी गृहयुद्ध माना जाता है जहां भयंकर लड़ाई, बीमारी और अकाल के कारण राज्य के आंतरिक संघर्ष में अब तक की सबसे अधिक मृतकों की संख्या दर्ज की गई है।

15. What are Glacial Lake Outburst Floods (GLOFs)? Highlighting the susceptibility of the Himalayan region to GLOFs, state the measures required to address them.

(250 words) 15

ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड्स (GLOFs) क्या हैं? GLOFs के प्रति हिमालयी क्षेत्र की सुभेद्यता पर प्रकाश डालते हुए, इनके समाधान के लिए आवश्यक उपायों का उल्लेख कीजिए।

दृष्टिकोण:

- ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड्स (GLOFs) को संक्षेप में समझाइए।
- हिमालयी क्षेत्र की GLOFs के प्रति संवेदनशीलता पर प्रकाश डालिए।
- इससे निपटने हेतु आवश्यक उपायों का उल्लेख कीजिए।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (GLOF) एक प्रकार की बाढ़ होती है जो हिमनद झीलों के फटने के कारण आती है। हिमालय में ग्लेशियर के निरंतर पिघलने से उत्तरोत्तर 5,000 से अधिक ग्लेशियर झीलों का निर्माण हुआ है जो संभावित रूप से अस्थिर हिमोढ़ों (Moraines) द्वारा अवरुद्ध हैं। इस परिस्थिति ने GLOFs के संभावित विस्फोट की संभावना को बढ़ा दिया है।

भारत के हिमालयी राज्यों के लिए हिमोढ़ द्वारा अवरुद्ध ग्लेशियल झीलों और ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (GLOF) का निर्माण एक प्रमुख चिंता का विषय है। यह अनुमान लगाया गया है कि उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू और कश्मीर लगभग 200 ऐसे ही संभावित खतरनाक हिमनद झीलों से घिरे हुए हैं। निम्नलिखित कारक इस क्षेत्र की GLOFs के प्रति संवेदनशीलता को और बढ़ा देते हैं:

- **झील में तीव्र ढाल संचलन** (स्खलन, प्रपात और हिमस्खलन) विस्थापन तरंगें उत्पन्न करता है। इन तरंगों के कारण जल या तो अवरुद्ध सीमा के ऊपर से प्रवाहित हो जाता है या अवरुद्ध सीमा (बांध) को तोड़ते हुए प्रवाहित होता है।
- **क्षेत्र में भारी वर्षा/हिम पिघलने के कारण** झील में जल का अंतर्प्रवाह बढ़ने से सोपानी प्रक्रिया (Cascading process) होती है जिससे GLOFs की घटना घटित होती है।
- हिमालय क्षेत्र में भूकंप की आशंका बनी रहती है इन **भूकंपों के कारण लेक आउटबर्स्ट फ्लड की घटना होती है।** बांधों का टूटना भी GLOFs के प्रमुख कारकों में से एक है। बांध की आंतरिक संरचना में क्रमिक परिवर्तन से आधारीय हिम पिघलने से प्रेरित द्रव स्थैतिक दबाव बढ़ जाता है जोकि बांध के टूटने का कारण बनता है ।
- अधिकतर हिमालयी राज्य पर्यटन के केंद्र भी हैं। बड़े पैमाने पर पर्यटन, विकास संबंधी हस्तक्षेपों जैसे कि सड़कों का निर्माण और जल विद्युत परियोजनाएं तथा भारतीय हिमालयी क्षेत्र के कुछ विशेष भागों में कृषि की कर्तन दहन (slash and burn) प्रथाएं भी GLOFs की घटना के लिए महत्वपूर्ण प्रेरक हैं।

इस संदर्भ में, निम्नलिखित उपाय किए जाने की आवश्यकता है:

- **GLOFs खतरे का मानचित्रण, भेद्यता मूल्यांकन, खतरे के क्षेत्र का सीमांकन आदि उपायों के द्वारा** GLOFs खतरे की घटनाओं का प्रबंधन करना। साथ ही, जोखिम कारक को समझने के उद्देश्य से **राज्य और जिला स्तर की आपदा प्रबंधन योजनाएं** तैयार करना।

- GLOFs के प्रति संवेदनशील क्षेत्रों में **भूमि उपयोग और नगर नियोजन उप-नियमों** और **अन्य सुरक्षा विनियमों** के अनुपालन के लिए **चिंतन करना, उन्हें लागू कराना और उनकी निगरानी करना।**
- विशेषज्ञों के परामर्श से ग्राउंड इंस्ट्रूमेंट, जल स्तर सेंसर और भूकंपीयता पर आधारित एक कुशल **प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली (EWS) का विकास** करना।
- **जोखिम न्यूनीकरण तकनीकों को लागू करके शमन उपायों को बढ़ाना,** अर्थात् सुरंग/स्पिलवे द्वारा जल कम करना और बांध निर्माण द्वारा खतरे में कमी करना।
- **सुभेद्य समुदायों की पहचान** और उनकी **सुरक्षित निकासी** के तौर-तरीके पहले से निर्धारित हो जाने चाहिए। इसके साथ ही, **सुभेद्य समुदायों में सभी को** इसके बारे में **पता होना चाहिए।**
- **मॉक ड्रिल** के माध्यम से वास्तविक आपदाओं के लिए समुदाय की भागीदारी और **उन्हें तथा सरकारी अधिकारियों को भी प्रशिक्षित करने** की आवश्यकता है।
- आपदा जोखिम प्रबंधन में **जलवायु परिवर्तन/परिवर्तनशीलता प्रभावों का पता लगाने के व्यवस्थित तरीकों की** भी आवश्यकता है।

इसके लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) और कई अन्य संगठन भारतीय नदी घाटियों के हिमालयी क्षेत्र में हिमनद झील निगरानी और जल निकायों की निगरानी में लगे हुए हैं। सिक्किम ने दक्षिण ल्होनक झील में झील निगरानी और सूचना प्रणाली (जल स्तर सेंसर) स्थापित किया है। यह सेंसर झील का जलस्तर बताता है और जलस्तर में अचानक उतार-चढ़ाव होने पर झील के स्तर पर भी निगरानी रखता है।

16. Highlighting the significance of critical minerals, provide an account of their distribution in India and the world. (250 words) 15

महत्वपूर्ण खनिजों के महत्व को रेखांकित करते हुए, भारत और विश्व में उनके वितरण का विवरण प्रस्तुत कीजिए।

दृष्टिकोण:

- महत्वपूर्ण खनिजों को परिभाषित करते हुए उत्तर प्रारंभ कीजिए।
- राष्ट्र के लिए ऐसे खनिजों के महत्व पर प्रकाश डालिए।
- भारत और विश्व में महत्वपूर्ण खनिजों के वितरण का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

महत्वपूर्ण खनिज वे धातुएं एवं अधातुएं है जिन्हें विश्व की प्रमुख और उभरती अर्थव्यवस्थाओं के आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। हालांकि इनकी आपूर्ति भूगर्भीय दुर्लभता, भू-राजनीतिक मुद्दों, व्यापार नीति या अन्य कारकों के कारण संकट में पड़ सकती है।

भारत के लिए महत्वपूर्ण खनिजों का महत्व:

- **घरेलू विनिर्माण क्षमता के पोषण हेतु आवश्यक:** बेरिलियम, जर्मेनियम, दुर्लभ मृदा तत्व (Rare Earth Elements: REE), रेनियम, टैंटलम आदि महत्वपूर्ण खनिजों का उपयोग उद्योगों तथा आधुनिक अनुप्रयोगों जैसे एयरोस्पेस, ऑटोमोबाइल, कैमरा, रक्षा, मनोरंजन प्रणाली, लैपटॉप, मेडिकल इमेजिंग, परमाणु ऊर्जा और स्मार्टफोन में विशेष रूप से किया जाता है। 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम की सफलता इन खनिजों पर निर्भर है।
- **निम्न-कार्बन उत्सर्जन वाली योजनाओं की सफलता के लिए आवश्यक:** लिथियम और सिलिकॉन जैसे महत्वपूर्ण खनिज क्रमशः इलेक्ट्रिक वाहनों और सौर पैनलों की बैटरी के निर्माण के लिए आवश्यक हैं। इस प्रकार, वर्ष 2022 तक 100GW सौर ऊर्जा तथा हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक वाहनों के विनिर्माण एवं राष्ट्रीय घरेलू कुशल प्रकाश कार्यक्रम जैसे स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्यों की उपलब्धियों के लिए ये आवश्यक है।
- **भविष्य के विकास के लिए आवश्यक:** उच्च तापमान युक्त अतिचालकता, पोस्ट-हाइड्रोकार्बन अर्थव्यवस्था के लिए हाइड्रोजन का सुरक्षित भंडारण और परिवहन भी REEs पर निर्भर हैं।
- **विदेश नीति पर प्रभाव:** भारत महत्वपूर्ण खनिजों के आयात पर निर्भर है:
  - **इसके भंडार** का संकेंद्रण/उत्पादन का एकाधिकार विश्व के कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित है।
  - विश्व में **संसाधन राष्ट्रवाद** की प्रवृत्ति तेजी से उभरी है। उदाहरण के लिए, चीन और इंडोनेशिया ने दुर्लभ मृदा और निकल तथा टिन जैसी धातुओं के निर्यात पर रोक लगाना शुरू कर दिया है। कांगो, अर्जेंटीना और मोजाम्बिक ने खनन

गतिविधियों को रोकने के लिए निर्यात पर कर बढ़ा दिया है। बोलीविया और पापुआ न्यू गिनी ने अपनी खनिज संपदा का राष्ट्रीयकरण कर दिया है।

अलग-अलग देश अपनी औद्योगिक जरूरतों के लिए विशेष खनिजों के सापेक्ष महत्व और आपूर्ति जोखिमों के रणनीतिक मूल्यांकन के आधार पर महत्वपूर्ण खनिजों की अपनी सूची विकसित करते हैं। इंडियन क्रिटिकल मिनरल्स स्ट्रैटेजी ने 49 खनिजों की पहचान की है, जो भारत के भविष्य के आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण होंगे।

भारत में महत्वपूर्ण खनिजों का वितरण:

- भारत में REEs सहित कई महत्वपूर्ण खनिजों के लिए उत्कृष्ट भूवैज्ञानिक क्षमता है। इन्हें **समुद्र तट की रेत से इल्मेनाइट और मोनाजाइट** से प्राप्त किया जा सकता है। **मुख्य रूप से केरल में समुद्र तट की रेत पर मोनाजाइट का समृद्ध भंडार** होने के बावजूद, भारत अपनी दुर्लभ मृदा की आपूर्ति के लिए 100 प्रतिशत आयात पर निर्भर है।
- अन्य महत्वपूर्ण खनिज निम्नलिखित क्षेत्रों में केंद्रित हैं:
  - **कोबाल्ट** - झारखंड, नगालैंड और ओडिशा
  - **मोलिब्डेनम** - तमिलनाडु, मध्य प्रदेश और कर्नाटक
  - **निकेल** - ओडिशा
  - **टाइटेनियम** - केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और ओडिशा
  - **टंगस्टन** - कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, राजस्थान
  - **वैनेडियम** - कर्नाटक और ओडिशा
- भारत में **लिथियम और इंडियम** का कोई ज्ञात भंडार नहीं था, यद्यपि हाल ही में मांड्या, कर्नाटक में लिथियम के निक्षेप पाए गए हैं।

विश्व में महत्वपूर्ण खनिजों का वितरण

- **दुर्लभ मृदा तत्व:** चीन विश्व के REE उत्पादन का 63% और मोलिब्डेनम का 45% उत्पादन करता है। वियतनाम, ब्राजील और रूस में भी दुर्लभ मृदा ऑक्साइड्स के पर्याप्त भंडार पाए जाते हैं।
- **कोबाल्ट:** डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो में 70% से अधिक कोबाल्ट का खनन किया जाता है, जिसमें चीन के पास अधिकांश स्वामित्व है।
- **लिथियम:** ऑस्ट्रेलिया विश्व के 55% लिथियम का उत्पादन करता है। चीन इसका प्रमुख आयातक है। ऑस्ट्रेलिया लिथियम, कोबाल्ट, जिरकोन, सुरमा, टैंटलम और दुर्लभ मृदा तत्व की भी आपूर्ति करता है।
- **प्लेटिनम:** दक्षिण अफ्रीका विश्व के प्लेटिनम उत्पादन का 72% खनन करता है।
- **निकेल:** इंडोनेशिया निकेल का सबसे बड़ा उत्पादक है।

यद्यपि सरकार ने क्रिटिकल मिनरल्स स्ट्रैटेजी, राष्ट्रीय खनिज नीति, खनिज बिदेश इंडिया लिमिटेड (KABIL) जैसे उपाय किए हैं, फिर भी भारत को अपनी आपूर्ति श्रृंखलाओं के विविधीकरण और महत्वपूर्ण खनिजों के पुनर्चक्रण को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

17. Highlighting the importance of ice sheets, discuss the likely impact of their melting on the planet with special focus on India. (250 words) 15

हिम चादरों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, भारत के विशेष संदर्भ में पृथ्वी पर उनके पिघलने के प्रभाव की विवेचना कीजिए।

दृष्टिकोण:

- हिम चादरें क्या हैं, इसकी व्याख्या करते हुए उत्तर प्रारंभ कीजिए।
- इनके महत्व पर प्रकाश डालिए।
- भारत पर विशेष ध्यान देते हुए, पृथ्वी पर इनके पिघलने के प्रभाव की विवेचना कीजिए।
- आगे की उपयुक्त राह बताइए।

उत्तर:

हिम चादर, हिमनद भूमि पर वह हिम राशि है, जो 50,000 वर्ग किलोमीटर (लगभग 19,000 वर्ग मील) से अधिक क्षेत्र में फैली हुई है। पिछले हिमनद काल के दौरान, पृथ्वी का अधिकांश भाग हिम चादरों से ढका हुआ था। हालांकि, वर्तमान में विश्व में केवल दो हिम चादरें हैं अर्थात् अंटार्कटिक हिम चादर और ग्रीनलैंड हिम चादर।

हिम चादरों का महत्व:

- **मीठे जल का भंडार:** अंटार्कटिक और ग्रीनलैंड की हिम चादरों में पृथ्वी का 99% से अधिक मीठा जल हिम के रूप में संगृहीत है।
- **मौसम और जलवायु पर प्रभाव:** ग्रीनलैंड और अंटार्कटिक हिम चादरें मौसम और जलवायु को प्रभावित करती हैं। हिम टोपियों पर बड़े एवं अधिक ऊंचाई वाले पठार तूफान के मार्गों को बदल देते हैं और हिम की सतह के करीब नीचे उतरती हुई ठंडी हवाएं निर्मित करते हैं।
- **पृथ्वी के जलवायु इतिहास का भंडार गृह**: हिम चादरें, बर्फ और हिम की परतों से बनी होती हैं जो लाखों वर्षों में संगृहीत होती हैं। इन परतों में गैस, धूल और जल के अणु फंसे होते हैं जिनका उपयोग वैज्ञानिक अतीत की जलवायु का अध्ययन करने के लिए कर सकते हैं।
- **पृथ्वी का ऊर्जा संतुलन बनाए रखना:** हिम चादरें अपने प्राप्त होने वाले सौर विकिरण के लगभग 60 से 90% को परावर्तित करके वैश्विक ऊर्जा संतुलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

विश्व भर के वैज्ञानिक चिंतित हैं कि पृथ्वी का तापमान बहुत तेजी से बढ़ रहा है (मुख्य रूप से मानव जनित कारणों से), जिससे हिमनद, हिम टोपियां और हिम चादरें पिघल रही हैं। 1990 के दशक की तुलना में ग्रीनलैंड और पश्चिमी अंटार्कटिका वर्तमान में कम से कम छह गुना अधिक हिम जल के रूप में प्रवाहित कर रहे हैं और वर्ष 1992 से 2017 तक उन्होंने अपना लगभग 6.4 ट्रिलियन टन द्रव्यमान खो दिया है।

पृथ्वी पर हिम चादरों के पिघलने का प्रभाव:

- **तटीय क्षेत्रों का जलमग्न होना:** ग्रीनलैंड और अंटार्कटिक में हिम चादरों के पिघलने से अंततः समुद्र का जल स्तर बढ़ सकता है, जिसके परिणामस्वरूप छोटे द्वीपीय राष्ट्र और तटीय क्षेत्र जैसे कि मुंबई, विशाखापत्तनम आदि जलमग्न हो सकते हैं।
- **तटीय कटाव और बाढ़:** हिम पिघलने और निरंतर जलवायु परिवर्तन से समुद्र के जलस्तर में वृद्धि तटीय क्षरण को बढ़ा देगी। यह अंतर्देशीय बाढ़ को भी बढ़ाएगी, क्योंकि खारे समुद्र का जल भूजल स्तर को भी बदल देता है और मीठे पानी के संसाधनों को जलमग्न कर देता है। यह इसलिए और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि भारत के तटीय क्षेत्र में लगभग 170 मिलियन लोग रहते हैं।
- **मौसम के प्रतिरूप में परिवर्तनशीलता:** हिम चादरों के पिघलने से महासागरीय धाराओं का संचलन बदल रहा है, इससे पृथ्वी के चारों ओर अधिक विनाशकारी तूफान और हरिकेन उत्पन्न होते हैं। भारत के संबंध में, यह मानसून की भविष्यवाणी और प्रतिरूप को बदल सकता है और गंभीर हीट वेव्स, दावानल और सूखा आदि जैसी आपदाओं को बनाए रख सकता है।
- **खाद्य असुरक्षा:** हिम चादरों के पिघलने के कारण मौसम की अनिश्चितता और हीट वेव्स उन फसलों को महत्वपूर्ण रूप से नुकसान पहुंचा सकती हैं जिन पर वैश्विक खाद्य प्रणालियां निर्भर हैं। यह अस्थिरता भारत में खाद्य संकट का कारण बन सकती है, क्योंकि खाद्य उत्पादन में गिरावट आ सकती है तथा भूख और कुपोषण के जोखिम वाले लोगों की संख्या भी बढ़ सकती है।
- **ग्लोबल वार्मिंग को स्थायी बनाना:** हिम चादरों के पिघलने से पर्माफ्रॉस्ट का विगलन होता है जिससे वातावरण में बड़ी मात्रा में मीथेन और अन्य ग्रीन हाउस गैसें उत्सर्जित होती हैं। इसके परिणामस्वरूप जलवायु आपदा आ सकती है। उदाहरण के लिए, औसत माध्य तापमान में वृद्धि से हिमालय के हिमनद अधिक मात्रा में पिघल सकते हैं, जिससे हिमनदों का आउटबर्स्ट हो सकता है और परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में बाढ़ आ सकती है।
- **जैव विविधता के लिए खतरा:** हिम की हानि और पर्माफ्रॉस्ट के पिघलने से न केवल आर्कटिक और अंटार्कटिक जैव विविधता के लिए बल्कि भारत सहित विश्व भर में जैव विविधता हेतु संकट उत्पन्न हो गया है। साथ ही इसमें संकटग्रस्त प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा है।

हिम चादर के पिघलने के मामले को एक गंभीर वैश्विक मुद्दे के रूप में लेना चाहिए और उसके अनुसार ही कार्य करना मानवता के हित में है। इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्रासंगिक है। संबंधित राष्ट्रीय सरकारों को महत्वाकांक्षी अभिप्रेत राष्ट्रीय निर्धारित योगदान (INDC) लक्ष्यों को अपनाना चाहिए और पेरिस समझौते की प्रतिबद्धता का पालन करना चाहिए।

18. What are twin cyclones? Discuss the role of Rossby waves and Madden-Julian Oscillation (MJO) in their formation. (250 words) 15

जुड़वाँ चक्रवात (ट्विन साइक्लोन) क्या होते हैं? उनके निर्माण में रॉस्बी तरंगों और मैडेन-जूलियन दोलन (MJO) की भूमिका की विवेचना कीजिए।

दृष्टिकोण:

- समझाइए कि जुड़वाँ चक्रवात क्या होते हैं?
- उनके निर्माण में रॉस्बी तरंगों और मैडेन-जूलियन दोलन (MJO) की भूमिका की विवेचना कीजिए।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

जुड़वाँ चक्रवात दो समकालिक (जिनकी उत्पत्ति एक ही समय पर हुई है) चक्रवात होते हैं, जो एक ही देशांतर पर उत्पन्न होते हैं। ये चक्रवात एक दर्पण प्रतिबिंब की भाँति एक-दूसरे की नकल करते हुए विपरीत दिशाओं में गति करते हैं। उत्तरी गोलार्ध में उत्तर की ओर बढ़ने वाला चक्रवात वामावर्त दिशा में घूमता है, जबकि दक्षिणी गोलार्ध में दक्षिण की ओर बढ़ने वाला चक्रवात दक्षिणावर्त दिशा में घूमता है।

रॉस्बी तरंगें और मैडेन-जूलियन दोलन जुड़वाँ चक्रवातों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

- **रॉस्बी तरंगें**, जिन्हें ग्रहीय तरंगों के रूप में भी जाना जाता है, **समुद्र की विशाल तरंगित गतियां हैं। ये पूरे ग्रह पर पश्चिम दिशा में क्षैतिज रूप से** सैकड़ों किलोमीटर तक फैली हुई हैं। ये **पृथ्वी के घूर्णन के** परिणामस्वरूप निर्मित होती हैं।
    - रॉस्बी तरंगों की प्रणाली में **उत्तरी और दक्षिणी दोनों गोलार्द्धों में एक-एक भंवर (Vortex) उपस्थित होता है** और दोनों ही भंवर एक-दूसरे के दर्पण प्रतिबिंब होते हैं। **उत्तर में भंवर वामावर्त घूमता है** और **एक सकारात्मक चक्रण होता** है, **जबकि दक्षिणी गोलार्ध में वह दक्षिणावर्त दिशा में घूमता है** और इसलिए एक नकारात्मक चक्रण होता है। दोनों में भ्रमिलता (Vorticity) का मान सकारात्मक होता है। यह घूर्णन की एक माप है।
- **मैडेन-जूलियन दोलन (MJO) बादलों, वर्षा, वायु और दबाव का पूर्व की ओर गति करने वाला विक्षोभ है।** यह उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में संपूर्ण पृथ्वी का चक्कर लगाता है और औसतन 30 से 60 दिनों में अपने प्रारंभिक बिंदु पर लौट आता है।

जुड़वां चक्रवातों के निर्माण में रॉस्बी तरंगों और मैडेन-जूलियन दोलन (MJO) की भूमिका इस प्रकार है:

- **जब उत्तरी और दक्षिणी दोनों गोलार्द्धों में भ्रमिलता (भंवर गति में द्रव) सकारात्मक होती है,** जैसा कि रॉस्बी तरंगों के मामले में होता है, तो भंवर की बाह्य परत में मौजूद आर्द्र वायु थोड़ी ऊपर उठ जाती है। **वायु के ऊपर उठने पर** जलवाष्प संघनित होकर बादल बनाती है। जैसे ही यह **संघनित** होती है, वाष्पीकरण की गुप्त ऊष्मा मुक्त हो जाती है। इससे वातावरण गर्म हो जाता है, वायु का यह भाग ऊपर उठता है और इस प्रक्रिया से **सकारात्मक प्रतिक्रिया** की शुरुआत होती है।
- MJO संवहन के बाद के परिसंचरण प्रतिरूप में **रॉस्बी तरंगे और संवहन के पश्चिम में भूमध्यरेखीय पश्चिमी पवनें और इसके पूर्व में केल्विन तरंगें शामिल हैं।** MJO संवहन के पूर्व में हिंद महासागर से पश्चिम प्रशांत महासागर की ओर बढ़ने के साथ यह परिसंचरण प्रतिरूप भी उसके साथ-साथ गति करता है। पश्चिम प्रशांत में, क्षीण हो रही संवहन प्रणाली से स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ने वाली केल्विन तरंग सिग्नल निकलती हैं और पश्चिमी गोलार्ध में यह तीव्र गति से आगे बढ़ती हैं, जिससे भूमध्य रेखा के दोनों ओर दो भंवर बनते हैं।

हाल ही में, यह घटना हिंद महासागर क्षेत्र में जुड़वाँ चक्रवातों, आसनी और करीम की एक जोड़ी के रूप में दर्ज की गई थी। ये चक्रवात क्रमशः उत्तरी गोलार्ध और दक्षिणी गोलार्ध में एक ही देशांतर पर उत्पन्न हुए थे और एक-दूसरे को प्रतिबिंबित करते हुए दूर चले गए।

19. Since independence, planning strategies for women's upliftment has evolved from welfare to development to empowerment. Elucidate. Also, discuss the role played by voluntary organizations in this context. (250 words) 15

स्वतंत्रता के पश्चात, महिलाओं के उत्थान के लिए नियोजन रणनीतियां कल्याण से लेकर विकास और सशक्तीकरण तक विकसित हुईं हैं। स्पष्ट कीजिए। साथ ही, इस संदर्भ में स्वयंसेवी संगठनों द्वारा निभाई गई भूमिका की भी विवेचना कीजिए।

दृष्टिकोण:

- एक संक्षिप्त परिचय देते हुए, स्पष्ट कीजिए कि भारत में विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में नियोजन रणनीतियां कल्याण से लेकर विकास और सशक्तीकरण तक कैसे विकसित हुई हैं।
- इस संदर्भ में स्वयंसेवी संगठनों द्वारा निभाई गई भूमिका की भी विवेचना कीजिए।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

स्वतंत्रता के बाद की अवधि में, यह माना गया था कि आर्थिक विकास नीतियां यानी कृषि विकास और आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, तकनीकी विकास आदि महिलाओं के साथ सभी के लिए बेहतर जीवन लाएंगी। इन वर्षों में, महिलाओं के लिए नियोजन रणनीतियाँ कल्याण से लेकर विकास और सशक्तीकरण की ओर निम्नलिखित तरीके से स्थानांतरित हुई हैं:

योजना रणनीति के हिस्से के रूप में कल्याण:

- कल्याणकारी दृष्टिकोण **पहली से पांचवीं पंचवर्षीय योजना (FYP)** से अपनाया गया था जिसका उद्देश्य महिलाओं के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए **पर्याप्त सेवाएं** प्रदान करना था ताकि वे परिवार और समुदाय में अपनी उचित भूमिका निभा सकें।
- यहां कल्याण पर जोर दिया गया था और इसलिए महिलाओं को राज्य द्वारा चयनित और प्रदान किए जा रहे **प्रोत्साहनों के** केवल **प्राप्तकर्ता के रूप में देखा जाता था** ।

योजना रणनीति के हिस्से के रूप में विकास:

- **6वीं पंचवर्षीय योजना** में कल्याण से विकास की ओर दृष्टिकोण में एक उल्लेखनीय बदलाव आया, जिसमें इसने **महिलाओं को विकास में प्रतिभागियों के रूप में मान्यता दी, न कि विकास लक्ष्यों के रूप में।** इसने महिलाओं से संबंधित तीन प्रमुख क्षेत्रों स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार पर त्रि-आयामी प्रयास के साथ एक बहु-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण अपनाया।
- **7वीं पंचवर्षीय योजना का उद्देश्य महिलाओं को राष्ट्रीय विकास की मुख्यधारा से जोड़ना था।** इस अवधि के दौरान, महिला एवं बाल विकास विभाग की स्थापना की गई और साथ ही सरकार द्वारा महिलाओं के लिए राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना (NPPW) जारी की गई। इससे महिलाओं के सर्वांगीण विकास को गति मिली।
- **8वीं पंचवर्षीय योजना में महिलाओं के लिए पंचायती राज संस्थाओं और शहरी स्थानीय स्वशासी निकायों में एक-तिहाई सीटों के आरक्षण का प्रावधान किया गया**, जिससे उनके समग्र विकास और विकास की रणनीति में भविष्य में बदलाव का मार्ग प्रशस्त हुआ।

योजना रणनीतियों के हिस्से के रूप में सशक्तीकरण:

- **9वीं पंचवर्षीय योजना** ने **महिलाओं के सशक्तीकरण की अवधारणा को सामने रखा** गया। जिसमें एक ऐसा सक्षम वातावरण बनाने की परिकल्पना की गई जहां महिलाएं न केवल कागजों पर, बल्कि कार्रवाई पर भी स्वतंत्रता का अनुभव कर सकें। महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए सरकार ने एक राष्ट्रीय नीति भी स्वीकार की।
- **जेंडर बजटिंग** की अवधारणा को **10वीं पंचवर्षीय योजना** में शामिल किया गया था। साथ ही, विशेष रूप से महिलाओं को लक्षित करके नरेगा (NREGA) योजना भी शुरू की गई।
- **11वीं और 12वीं पंचवर्षीय योजना में** हाशिए पर स्थित **विभिन्न वर्गों को शामिल करने से संबंधित समावेशी विकास का विचार सामने आया।** जिसमें महिला वर्ग के मुद्दों पर भी विशेष रूप से ध्यान दिया गया। इस योजना ने महिलाओं की केवल आय संबंधी निर्धनता के स्थान पर कल्याण और निर्धनता के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाने की वकालत की गई।

स्वैच्छिक संगठनों की भूमिका:

- 1970 और 1980 के दशक के अंत में महिलाओं के संघर्ष का पुनरुत्थान हुआ और नए महिला समूहों और संगठनों का उदय हुआ। जिसने **मातृत्व लाभ की कमी, कार्यस्थल पर बच्चों से संबंधित सुविधाओं की कमी, पारिश्रमिक के स्तर पर व्याप्त भेदभाव आदि जैसे मुद्दों को उठाया।**
- **स्व-रोजगार महिला संघ (SEWA), कामकाजी महिला मंच (Working Women's Forum) आदि** जैसे नए संगठनों ने **असंगठित क्षेत्र में महिला श्रमिकों की दुर्दशा** से खुद को जोड़ लिया।

- 1970 के दशक के उत्तरार्ध में, इन महिला संगठनों ने **कल्याणकारी दृष्टिकोण को खारिज कर दिया** और दहेज, हिंसा, शराब, कार्यस्थल पर भेदभाव आदि जैसे विशिष्ट मुद्दों पर महिलाओं को संगठित करने के लिए विरोध दर्शाने वाली नीतियों को अपनाया।
- **भारतीय राष्ट्रीय महिला फेडरेशन (NFIW) और अखिल भारतीय लोकतांत्रिक महिला संघ (AIDWA)** जैसे अन्य संगठन थे। जिन्होंने **कस्बों और गांवों में महिलाओं को संगठित करने का काम अपने हाथ में लिया।**

इस प्रकार, महिला स्वयंसेवी संगठनों ने महिलाओं के मुद्दों को प्रभावी ढंग से सार्वजनिक वाद-विवाद के क्षेत्र में वापस लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्होंने कल्याण से सशक्तीकरण की ओर संक्रमण के लिए सरकार पर दबाव बनाया और महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन और विकास के एजेंट के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया।

20. How far do you agree with the view that globalisation has aggravated the challenges faced by the poor in India? (250 words) 15

आप इस विचार से कहां तक सहमत हैं कि वैश्वीकरण ने भारत में निर्धनों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों को और बढ़ा दिया है?

दृष्टिकोण:

- वैश्वीकरण पर एक संक्षिप्त परिचय दीजिए ।
- चर्चा कीजिए कि इसने भारत में निर्धनों के लिए चुनौतियों को कैसे बढ़ा दिया है।
- निर्धन लोगों के कल्याण को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों का उल्लेख कीजिए।
- उपर्युक्त बिंदुओं के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

वैश्वीकरण, जिसे विभिन्न देशों में पूंजी, वस्तुओं, लोगों और विचारों की आसान आवाजाही के रूप में समझा जाता है, भारत के लिए आधुनिक समय की घटना नहीं है। हालांकि, संचार और परिवहन के आधुनिक साधनों के आगमन के कारण इस प्रक्रिया का स्तर अब बेजोड़ है।

20वीं शताब्दी में, भारत ने अपने आर्थिक सुधारों के एक भाग के रूप में अधिक से अधिक वैश्विक अंतर्संबंध की प्रक्रिया शुरू की। इसी अवधि के दौरान हालांकि भारत अपनी राष्ट्रीय आय को तीन गुना बढ़ाने में सक्षम रहा था, किंतु भारत के निर्धन वर्ग के लिए, इसके प्रभाव सार्वभौमिक रूप से सकारात्मक नहीं रहे हैं।

भारत के निर्धनों पर वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव:

- **असमानता और निर्धनता में वृद्धि:** विश्व असमानता रिपोर्ट 2022 के अनुसार, **भारत में घरेलू असमानता कई गुना बढ़ गई है**, जबकि विभिन्न देशों के बीच वैश्विक असमानताओं में गिरावट आई है। असमानता में वृद्धि का सीधा संबंध निर्धनता, सामाजिक अशांति और राजनीतिक अस्थिरता से है।
- **कम मजदूरी और खराब श्रम प्रबंधन मानक: स्थानीय रोजगार सृजित करने के दबाव और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा** ने ऐसे श्रम मानकों और श्रम प्रबंधन प्रथाओं को जन्म दिया है, जो औद्योगिक देशों के मुकाबले काफी कमजोर हैं।
- **अति-शहरीकरण का मुद्दा:** अति-शहरीकरण, जहां मूलभूत **भौतिक, सामाजिक और आर्थिक अवसंरचना, संवृद्धि के आकार और दर के अनुरूप नहीं है**, यह सामाजिक और आर्थिक अवसंरचना और अवसरों तक पहुंच सुनिश्चित करने में निर्धन लोगों को प्रतिकूल रूप से सर्वाधिक प्रभावित कर रहा है।
- **अंतर्राष्ट्रीय प्रवास**: लोग बेहतर आर्थिक अवसरों के लिए दूसरे देशों में जाते हैं, जहां उन्हें **निम्न-श्रेणी के व्यवसायों में नियोजित किया जाता है। उनके पास सीमित अधिकार होते हैं और न ही कोई रोजगार सुरक्षा होती है एवं अक्सर उनके साथ दुर्व्यवहार और भेदभाव किया जाता है।**
- **पर्यावरण क्षरण:** उच्च प्रतिस्पर्धा, आर्थिक दक्षता की दिशा में अधिक प्रयास और वस्तुओं के केवल मौद्रिक मूल्य पर ध्यान केंद्रित करने के कारण पर्यावरणीय क्षरण हो रहा है, जो **निर्धनों को असमान रूप से प्रभावित करता है।**

हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि भारत में निर्धनों से संबंधित मुद्दे **केवल वैश्वीकरण का परिणाम नहीं हैं**, निम्नलिखित अन्य कारक भी इसके लिए जिम्मेदार हैं:

- **भ्रष्टाचार:** एक समाज में भ्रष्टाचार, कुशल संसाधन आवंटन और असमानता को कम करने के प्रयासों को विकृत करता है।

- **संस्थानों की अक्षमता:** राजनीतिक संस्थानों की अक्षमता आर्थिक संवृद्धि को बाधित करती है क्योंकि राजनीतिक संस्थान यह निर्धारित कर सकते हैं कि धन कैसे अर्जित और वितरित किया जाये। सहयोगी शासन की अनुपस्थिति आर्थिक विकास उत्पन्न करने के लिए आवश्यक शर्तों को बाधित कर सकती है।
- **अन्य कारकों** में मानव पूंजी और अवसंरचना में कम निवेश, किसानों के लिए ऋण और तकनीकी सहायता का अपर्याप्त प्रचार और व्यापक आर्थिक अस्थिरता शामिल है।

पिछले तीन दशकों में भारत द्वारा प्राप्त उच्च संवृद्धि दर के कारण, यह बड़ी संख्या में लोगों को गरीबी से बाहर निकालने में सक्षम रहा है। हालांकि, यह सुनिश्चित करने में चुनौती बनी हुई है कि वैश्वीकरण के लाभों को समान रूप से साझा किया जाए। इसे हासिल करने के लिए सरकार **मानव संसाधनों के क्षमता-निर्माण** पर काम कर रही है और इस क्षमता को साकार करने के लिए अनुकूल माहौल तैयार कर रही है। विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के द्वारा इसमें एक **विस्तृत सामाजिक सुरक्षा जाल** भी शामिल किया गया है। असमानता और गरीबी को कम करने का समाधान इन उपायों के प्रभावी कार्यान्वयन में निहित है, यह भारत जैसे वैश्वीकृत राष्ट्र में निर्धनों के सामने आने वाली समस्याओं को दूर करने में एक लंबा रास्ता तय करेगा।

Copyright © by Vision IAS
All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.